अनन्सी मकड़े के कारनामे–3

अनन्सी मकड़ा अफ्रीका में

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Anansi Made Ke Karname-3 (Adventures of Anansi Spider-3)
Cover Page picture: Anansi Spider
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of West Africa

West Africa – 16 Countries
(1) Benin, (2) Burkina Faso, (3) Cape Verde, (4) Gambia, (5) Ghana, (6) Guinea, (7) Guinea Bissau, (8) Ivory Coast, (9) Liberia, (10) Mali, (11) Mauritania, (12) Niger, (13) Nigeria, (14) Senegal, (15) Sierra Leone, (16) Togo,

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

अनन्सी मकड़े के कारनामे–3 5

1 कुत्ता, बिल्ला, कबूतर और जादू की अँगूठी 7

2 मारने वाली डंडी 26

3 अनन्सी और काई ढका पत्थर 38

4 अनन्सी और खाने का बरतन 48

5 भुलक्कड़ अनन्सी 63

6 सोने वाली चटाई के राज़ 70

7 अनन्सी और गाने वाला शाल 78

8 अनन्सी और चिड़ियें 84

9 मकड़ा और उसके दो दोस्त 89

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

अनन्सी मकड़े के कारनामे–3

दुनियॉ के हर समाज की लोक कथाओं में कोई न कोई चालाक होता है। यह चालाक कोई जानवर भी हो सकता है और कोई आदमी भी हो सकता है। भारत में खरगोश और लोमड़ी बहुत चालाक जानवर माने जाते हैं और गीदड़ बहुत ही डरपोक। पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया और घाना आदि देशों में यह काम अक्सर अनन्सी मकड़ा करता हैं। दूसरे देशों में रहने वाले लोग तो अनन्सी मकड़े की लोक कथाओं को पूरे अफ्रीका के नाम से ही जोड़ देते हैं। पर यह पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाओं का सबसे ज़्यादा लोकप्रिय हीरो है।

वैसे तो इन दोनों देशों में मकड़े की बहुत सारी कहानियॉ मशहूर हैं पर वहॉ की मकड़े की कई लोक कथाओं में उस मकड़े को अनन्सी का नाम नहीं दिया गया है पर साधारणतया मकड़े की हर लोक कथा को अनन्सी मकड़े के नाम से जोड़ दिया गया है।

यहॉ हम अनन्सी मकड़े के बारे में कुछ बता दें कि यह मकड़ा कोई साधारण मकड़ा नहीं है, यह एक खास मकड़ा है जो कोई भी रूप ले सकता है और फिर कुछ भी कर सकता है पर सामान्य रूप से यह दो ही रूपों में दिखायी देता है – एक आदमी के रूप में और दूसरे मकड़े के रूप में।

अनन्सी मकड़ा एक परी मकड़ा[1] है। यह मकड़ा अक्लमन्द है और हर समय इसके दिमाग में कुछ न कुछ शरारत सूझती रहती है। यह किसी भी रूप में आये पर अपने हर रूप में यह लालची और सुस्त है और किसी भी हद तक होशियार और चालाक है। बस इसकी यह ज़्यादा होशियारी और चालाकी इसको कभी कभी उलटी पड़ जाती है और उससे इसी को बहुत नुकसान उठाना पड़ जाता है।

इसको खाने का बहुत शौक है। क्योंकि यह आलसी है इसलिये यह अपना खाना न उगाता है और न बनाता है। यह हमेशा अपने दोस्तों के या दूसरों के घर जा कर ही खाता रहता है और वहॉ भी यह सबसे ज़्यादा खाता है। इस खाने के चक्कर में इसको कई बार नुकसान भी बहुत होता है।

इसके अलग अलग जगहों पर अलग अलग नाम हैं। इसका अपना नाम अनन्सी मकड़ा है पर घाना में यह क्वेकु अनन्सी के नाम से मशहूर है। कहीं कहीं क्वेकु इसके बेटे का नाम भी है। उत्तरी नाइजीरिया की हौसा जनजाति में इसका नाम गीज़ो है और इसकी पत्नी का नाम कभी कोकी और कभी असो[2] है। घाना, पश्चिमी अफ्रीका, की केवल एक लोक कथा में इसका नाम ईग्या अनन्सी दिया हुआ है।[3] इसके दो बेटे हैं – टिकूमा और कूमा।[4] एक जगह इसके एक बेटे का नाम क्वेकु सीन दिया गया है।

कभी कभी यह मकड़ा अमेरिकन इन्डियन्स की लोक कथाओं में भी पाया जाता है वहॉ इसके नाम है अनैन्सी, या टारनटूला, या निहानकन[5] मकड़ा।

---

[1] Spider Fairy

[2] Koki or Asso – names of the wife of Anansi in Northern NIgeria

[3] His own name is Anansi. In Ghana he is known as Kweku or Kwaku Anansi. Sometimes his son is also known as Kweku. In Hausa tribe of Northern Nigeria he is known as Gizo. Only in one Western African folktale he is called as Eegya Anansi.

[4] He has two sons – Ntikuma and Kuma. At one place his one son's name is given as Kweku Tsine.

[5] Anancy, Tarantula, Nihankan

अनन्सी मकड़े के कारनामों की लोक कथाओं के हम दो संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं – "अनन्सी मकड़े के कारनामे–**1**" और "अनन्सी मकड़े के कारनामे–**2**"। इसके पहले संग्रह में हमने उसकी कुछ लोक कथाऐं ऐसी दी थीं जिनसे यह पता चलता है कि ये अनन्सी की कहानियॉ आयी हीं कैसे। या वह कितना अक्लमन्द है और उसके पास यह अक्लमन्दी आयी कहॉ से। या फिर कुछ ऐसी कथाऐं थीं जो मकड़े की शक्ल और उसके रहने की जगह के बारे में बताती हैं।

इसके दूसरे संग्रह – "अनन्सी मकड़े के कारनामे–**2**" में हमने इसकी कुछ ऐसी लोक कथाऐं दी थीं जो उसके दूसरे जानवरों और आदमियों के साथ के बरताव की थीं।

अब अनन्सी की लोक कथाओं का यह तीसरा संग्रह प्रस्तुत है – "अनन्सी मकड़े के कारनामे–**3**"। इस संग्रह में भी दूसरे संग्रह जैसी ही कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पश्चिमी अफ्रीका के देशों की ही हैं पर अधिकतर घाना देश की हैं। इसकी कथाऐं कई पुस्तकों और वेब साइट से ली गयी हैं।[6]

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और पश्चिमी अफ्रीका की संस्कृति के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

---

[6] 1. "The Orphan Girl and the Other Stories". By Offodile Guchi.
2. "The Cow-Tail Swich and Other West African Stories". By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
3. "African Folktales" by A Ceni.
4. "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

1 कुत्ता, बिल्ला, कबूतर और जादू की अँगूठी[7]

एक बार की बात है कि अफ्रीका के घाना देश में एक स्त्री रहती थी। वह उतनी ही गरीब भी थी जितनी कि वह बदकिस्मत थी। वह विधवा थी और उसके सब बच्चे एक एक करके मर चुके थे। कुछ बीमारी से, कुछ ऐक्सीडैन्ट से और कुछ लड़ाई में।

अब उसके पास केवल उसका एक ही बेटा रह गया था और वह था उसका सबसे छोटा बेटा। वही उसकी दुखी ज़िन्दगी का अकेला सहारा था। उसका वह बेटा बहुत ही दयालु और अच्छे दिल वाला आदमी था।

एक दिन उसका बेटा रोज से पहले ही जाग गया। वह अपनी माँ के पास गया और उससे बोला — "माँ आज मुझे थोड़ा सा सोने का चूरा दो मैं समुद्र के किनारे वाले गाँव से थोड़ा सा नमक खरीद कर लाऊँगा।"

माँ को अपने बेटे पर पूरा विश्वास था सो उसने पूछा — "कितना चाहिये?"

बेटा बोला — "बस एक चुटकी।"

[7] The Dog, the Cat, the Pigeon and the Magic Ring – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, West Africa. Adapted from the book : "African Folktales" by A Ceni.
This is not a direct tale of Anansi but he has a role to play in it.

उसकी मॉ ने उसको एक चुटकी सोने का चूरा दे दिया। उसने उन चीज़ों की एक गठरी बनायी जिनकी उसको अपनी यात्रा के लिये जरूरत थी और वह उस गॉव को चल दिया जहॉ से उसको नमक लाना था।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो अपना एक काला और सफेद धब्बे वाला कुत्ता बाजार में बेचने के लिये ले कर जा रहा था। लड़के को कुत्ता बहुत अच्छा लगता था सो वह उस आदमी से बोला — "मैं इस कुत्ते को खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे अपना यह कुत्ता बेचोगे?"

वह आदमी बोला — "क्यों? तुम तो बहुत छोटे लड़के हो तुम इसकी कीमत कैसे दोगे?"

"तुम इसकी चिन्ता न करो बस यह बताओ कि यह है कितने का?"

"ठीक है। तुम इसके लिये एक चुटकी भर सोने का चूरा दे दो।"

"हा हा हा हा। लो यह लो एक चुटकी भर सोने का चूरा और यह कुत्ता मुझे दे दो।" कह कर उसने उस आदमी को सोने का चूरा दिया, उससे उसका कुत्ता लिया और घर वापस आ गया।

जब उसकी मॉ ने देखा कि उसका बेटा तो इतनी जल्दी वापस आ गया और वह भी एक कुत्ते के साथ तो उसको बहुत अजीब

लगा। उसने पूछा — "तुमने उस समुद्र के पास वाले गॉव से नमक नहीं खरीदा, क्यों?"

"क्योंकि मैंने उस सोने के चूरे से यह सुन्दर कुत्ता खरीद लिया।"

मॉ ने एक लम्बी सॉस लेते हुए कहा "उफ़।"

कुछ दिन बाद वह इस बात को भूल गयी।

पर करीब एक महीने बाद उस लड़के ने फिर से अपनी मॉ से कहा — "मॉ मुझे थोड़ी सा सोने का चूरा और दो। मैं आज यह देखने के लिये बाजार जाना चाहता हूँ कि शायद कहीं कोई अच्छा सौदा पट जाये।"

"मुझे डर है कि तुम उसे भी पिछली बार की तरह से बरबाद कर दोगे।"

"मॉ चिन्ता न करो, तुम देखोगी कि मैं तुमको शिकायत का कोई मौका नहीं दूँगा।"

क्योंकि वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी इसलिये उसने उसको फिर से सोने का चूरा दे दिया। और वह लड़का फिर से चल दिया।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो एक बिल्ले को अपनी गोद में लिये बैठा था। वह एक बहुत ही सुन्दर सा बिल्ला था सो वह लड़का उससे यह कहे बिना न रह सका — "मुझे यह बिल्ला खरीदना है। मुझे बिल्लों की चंचलता बहुत अच्छी लगती है। यही

एक जानवर है जो कूद कर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। क्या तुम मुझे यह बिल्ला बेचोगे?"

बिल्ले के मालिक ने कहा — "मैं यह बिल्ला तुम्हें बिल्कुल नहीं बेच सकता। क्योंकि मैंने इसे अभी अभी इसलिये खरीदा है ताकि यह मेरे सोने के कमरे में से चूहों को भगा सके। और अगर मैं तुमको इसे बेच भी दूँ तो तुम इसकी कीमत कैसे चुकाओगे? तुम तो इसकी कीमत देने के लिये बहुत छोटे हो।"

"तो तुम यह सब मुझसे इसलिये कह रहे हो क्योंकि मैं केवल एक लड़का हूँ। उसकी तुम चिन्ता न करो। बस यह बताओ कि इसका तुम कितना पैसा लोगे?"

आदमी बोला — "अगर तुमको यह वाकई चाहिये तो तुम इसका दो चुटकी सोने का चूरा दाम दे दो।"

लड़के ने उसको दो चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे बिल्ला खरीद लिया और अपने घर चला आया। उसकी माँ फिर से बहुत आश्चर्यचकित हो गयी कि उसका बेटा इतनी जल्दी घर वापस कैसे आ गया।

"देखो माँ, मैं कितना सुन्दर बिल्ला ले कर आया हूँ। यह मुझे इतना सुन्दर लगा कि मैं अपने आपको इसे खरीदने से रोक ही नहीं सका।"

"बेटा मैं तो सोचती थी कि तुम दूसरों से बहुत अलग हो पर तुम तो दूसरों जैसे ही निकले।" कह कर उसने उसको बहुत डॉटा पर वह क्या करती बेचारी चुप रह गयी।

इस घटना के बाद फिर से करीब **40** दिन निकल गये कि एक दिन फिर वह अपनी मॉ के पास गया और बोला — "मॉ मुझे कुछ सोने का चूरा और दो अबकी बार मैं अपना कुछ काम शुरू करना चाहता हूॅ।"

मॉ बोली — "बेटा मेरे पास अब केवल तीन चुटकी ही सोने का चूरा रह गया है। तुम उसे चाहे जहॉ ले जाओ। मगर याद रखना कि इसके बाद बस सब खत्म।"

लड़का बोला — "मॉ मेरे ऊपर भरोसा रखो।"

अगले दिन वह अपना सामान ले कर वहॉ से चल दिया। वह अभी थोड़ी दूर ही गया होगा कि उसको एक शिकारी मिला जिसके पास एक कबूतर था। लड़के को लगा कि वह शिकारी उस कबूतर को पकड़ कर अपने घर पकाने के लिये ले जा रहा था।

वह शिकारी से बोला — "मैं तुम्हारा यह कबूतर खरीदना चाहता हूॅ। मुझे जब ये कबूतर आवाज निकालते हैं तो बहुत अच्छे लगते हैं।"

शिकारी बोला — "पर मैं इस कबूतर को बेचना नहीं चाहता।"

लड़का बोला — "क्यों ऐसी क्या बात है इसमें? तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हें इसके अच्छे पैसे दूँगा।"

"क्या सचमुच? अगर मैं इसको बेचूँ तो मुझे इसके लिये कम से कम तीन चुटकी सोने का चूरा चाहिये।"

"लो यह लो तीन चुटकी सोने का चूरा और यह कबूतर मेरे हवाले करो।" लड़के ने उसको तीन चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे कबूतर लिया और घर वापस आ गया।

कोई भी यह सोच सकता है कि जैसे ही उसकी माँ ने उसको अपने कन्धे पर कबूतर रखे आते देखा होगा तो उस बेचारी का क्या हाल हुआ होगा।

वह बोली — "बेटा यह तुमने क्या किया? अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं है अब हम खायेंगे क्या।"

लड़का भी यह सुन कर दुखी हुआ। उसको को पता ही नहीं था कि वह अपनी माँ से क्या कहे। अपनी करनी पर अफसोस करता हुआ वह अपने घर के दरवाजे के बाहर जा कर बैठ गया। कुत्ता उसके पैरों के पास बैठा था, बिल्ली उसकी गोद में बैठी थी और कबूतर उसके कन्धे पर बैठा था।

वह वहाँ बैठा बैठा सोच रहा था "अब मैं क्या करूँ। अपने इन बेकार के विचारों को किस तरह सुधारूँ? कैसे अपनी माँ की

सहायता करूँ?" और जब वह अपनी गलती महसूस कर रहा था तो उसने अपने कान में एक धीमी सी आवाज सुनी।

यह कबूतर था — "शान्त हो जाओ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।" कबूतर ने इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि उसके कहने का लड़के पर क्या असर पड़ा।

वह आगे बोला — "मेरे अच्छे साथी, तुमको मालूम होना चाहिये कि मेरे अपने गॉव में मैं एक बहुत बड़ा सरदार था। एक दिन मैं ऐसे ही घूमने के लिये कहीं जा रहा था कि इस शिकारी ने मुझे पकड़ लिया।

अगर तुमने मुझे न खरीद लिया होता तो अब तक तो मैं मर ही गया होता और पका लिया गया होता। इसलिये तुम मुझे मेरे गॉव वापस ले चलो तो वहॉ मेरे लोग तुम्हारा ज़ोर शोर से स्वागत करेंगे।"

यह सुन कर लड़का कुछ समझ नहीं पाया कि वह कबूतर क्या कह रहा था। वह बोला — "कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम मुझे कोई कहानी बता कर मेरे पास से भाग जाना चाहते हो।"

"अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो तुम मेरे एक पैर में रस्सी बॉध दो जिससे मैं उड़ कर कहीं और नहीं जा पाऊँगा।"

सो लड़के ने उसके एक पैर में रस्सी बॉधी और जिधर को भी वह कबूतर उसको ले गया वह उस कबूतर के पीछे पीछे चलता चला गया।

जब वे गॉव की हद के पास पहुॅचे तो वहॉ दो बच्चे रंगीन कंचों[8] से खेल रहे थे। चिड़िया को देखते ही वे तुरन्त ही उठे और वहॉ से चिल्लाते हुए गॉव की तरफ भागने लगे "सरदार आ गये। सरदार वापस आ गये।"

यह सुन कर वहॉ के सारे आदमी और स्त्रियॉ उन दोनों बच्चों के पीछे सरदार से मिलने के लिये भागे। वे खुशी से चिल्ला रहे थे और उनके हाथों में शाही झंडे थे जो वे जब लेते थे जब वे राजा को लेने के लिये जाते थे।

सरदार के वापस आने की खुशी में उन्होंने सबने मिल कर बहुत खुशियॉ मनायी।

कबूतर ने उनको फिर अपनी सारी कहानी बतायी। साथ ही यह भी बताया कि उस लड़के ने उसकी जान बचाने के लिये अपना आखिरी सोना तक दे दिया। यह सुन कर तो वहॉ के सारे बड़े और छोटे लोग उस लड़के के बड़े कृतज्ञ हुए।

पहले तो रानी मॉ और गॉव के बड़े लोगों ने लड़के को एक घड़ा भर कर सोने का चूरा दिया। उसके बाद एक जादूगर[9] आया। उसने अपनी अॅगुली में से एक अॅगूठी निकाली और उसे लड़के

[8] Translated for the word "Marbles" – see their picture above.

[9] Translated for the word "Witch Doctor". He is like Ojha in India who works on Bhoot, Pret and Spirits.

को देते हुए कहा — "लो, यह अँगूठी लो। तुम इससे जो कुछ भी माँगोगे यह अँगूठी तुमको वही दे देगी।"

लड़का वहाँ तीन दिन और तीन रात तक मेहमान की तरह से रहा लेकिन फिर उसके जाने का भी दिन आया।

उस दिन उसने कबूतर को एक बहुत ही मीठा सा विदा का सन्देश दिया। फिर उसने एक बड़ी सी भेड़ की खाल में सोने का चूरा भरा और अपने बचाने वाले को भेंट दी।

अँगूठी और सोने का चूरा ले कर वह लड़का अपने घर अपनी माँ के पास चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ अनाज के दाने निकाले जाने वाली जगह पर बैठी मुर्गियों को दाना खिला रही थी। वह दौड़ा दौड़ा गया और जा कर अपनी माँ को गले लगाया। उसने उसको अपना लाया सोने का चूरा और जादू की अँगूठी भी दिखायी।

उसने उन सबके बारे में उसको जल्दी जल्दी बता दिया ताकि वह बेचारी ज़्यादा आश्चर्य से कहीं बेहोश ही न हो जाये। फिर वह बोला — "अब मैं जंगल जाता हूँ और इस अँगूठी की सहायता से अपने रहने के लिये एक नया गाँव बसाता हूँ।"

ऐसा कह कर वह घर के बाहर चला गया और घने जंगल में घुस गया। वहाँ भी वह काफी दूर तक चलता रहा। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया जहाँ जंगल बहुत ही घना था और वहाँ से आगे जाना मुमकिन ही नहीं था।

वहाँ उसने अपनी जादू की अँगूठी जमीन पर रखी और उससे कहा — "अँगूठी, यहाँ पर एक बहुत बड़ी खुली जगह बनाओ जिसमें बहुत सारे पेड़ और ब्लैक बैरी[10] की झाड़ियाँ हों।"

तुरन्त ही वहाँ के जंगली पेड़ नीचे गिर पड़े, जड़ से उखड़ गये और उन्होंने वहाँ की झाड़ियों को कुचल डाला।

लड़के ने फिर अँगूठी को हुकुम दिया — "अब इन सबको इकट्ठा करके जला दो।"

पलक झपकते ही सारी लकड़ियाँ, पेड़, झाड़ियाँ उस साफ जगह में इकट्ठा हो गये और जल कर राख हो गये।

लड़के ने फिर कहा — "अँगूठी, अब यहाँ इस साफ जमीन पर बहुत सारे मकान बना दो।" तुरन्त ही उस जमीन पर छोटे बड़े मकान मुशरूम की तरह से निकलने लगे।

आखीर में उसने उसको कहा — "ओ अँगूठी, इन घरों को खाली मत छोड़ो बल्कि इन सबको लोगों से भर दो।"

तुरन्त ही जादू की तरह उन सब घरों में लोगों की चहल पहल शुरू हो गयी। ऐसा लग रहा था जैसे वे हमेशा से वहीं रहते चले आ रहे हों।

[10] Blackberry is a kind of small fruit without any stone in it – see its picture above. The bigger black fruit is blackberry.

लड़का यह सब देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसने अपने आपको उस गॉव का सरदार घोषित कर दिया।

इस नये गॉव से एक दिन की दूरी पर अनन्सी मकड़ा रहता था। एक दिन उसने इस खुश गॉव के बारे में सुना जो जादुई ढंग से जंगल के बीच में अपने आप ही प्रगट हो गया था।

अनन्सी उस गॉव के बारे में इतना ज़्यादा उत्सुक हो गया कि उसने निश्चय किया कि वह खुद जा कर उसको देखेगा। सो वह उस लड़के से मिलने चल दिया।

वहॉ जा कर इधर उधर देखते हुए वह उस लड़के से बोला — "बधाई हो तुमको। आखिर तुम खुशकिस्मत हो ही गये। मुझे याद है कि पहले तुम बहुत गरीब थे और पिछली बार तो जब मैंने तुमको देखा था तब तो तुम पतले भी बहुत थे। पर यह सब तुमने किया कैसे?"

वह लड़का सच बोलता था कुछ छिपाता नहीं था सो उसने उसको भी सब कुछ सच सच बता दिया। यह सब सुन कर अनन्सी उससे जलने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह उस लड़के की अॅगूठी ले ले पर बाहर से उसने ऐसा दिखाया कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

उसने बड़े प्यार से लड़के को विदा कहा और अपने गॉव वापस चला गया।

गॉव पहुँच कर उसने अपने एक भतीजे[11] को बुलाया और उससे कहा — "भतीजे, मेरा एक काम करो। तुम जंगल में अचानक प्रगट हुए उस नये गॉव में जाओ और उसके नौजवान सरदार से मिलो।

उसको तुम यह एक घड़ा भर कर शराब भेंट में देना और उससे दोस्ती करना। फिर जितनी जल्दी हो सके उसकी अँगूठी चुरा लाना।"

उसका वह भतीजा अपने चाचा की तरह ही चालाक था। वहॉ उसने किसी भी चीज़ के बारे में कुछ भी बात नहीं की। बस उस नये गॉव के नौजवान सरदार के लिये शराब ले कर सीधा उस नये गॉव की तरफ चल दिया।

अनन्सी का भतीजा और वह नौजवान सरदार दोनों जल्दी ही बहुत अच्छे दोस्त बन गये। उस नौजवान सरदार ने अनन्सी के भतीजे से कहा कि वह उस गॉव के मेहमान की तरह से उसके पास कितने भी दिन ठहर सकता है। सो अनन्सी का भतीजा उसके पास ही ठहर गया।

तीन दिन निकल गये। चौथे दिन सुबह सरदार तैरने के लिये नदी पर जाना चाहता था सो उसने अपनी अँगूठी उतार कर मेज पर रख दी और तैरने चला गया।

[11] Translated for the word "Nephew". In English it may mean anything – brother's son or sister's son.

अब जब अनन्सी का भतीजा वहाँ अकेला रह गया तो उसने वह अँगूठी उठायी और अपने चाचा के गाँव जितनी तेज़ी से भाग सकता था भागा चला गया।

जैसे ही अनन्सी के हाथ में वह जादुई अँगूठी आयी उसने अँगूठी को हुकुम दिया कि वह उस नौजवान सरदार के नये गाँव से भी ज़्यादा बड़ा और सुन्दर गाँव बना दे। पल भर में ही उसकी यह इच्छा पूरी कर दी गयी।

इस बीच वह लड़का नदी से तैर कर घर वापस आ गया। उसने देखा कि उसकी अँगूठी और उसका मेहमान दोनों ही गायब हैं। उसने उन दोनों को ही ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उसको वे दोनों ही कहीं नहीं मिले।

उसको बहुत चिन्ता हुई तो उसने सलाह के लिये जंगल की आत्मा[12] को बुलाया। जंगल की आत्मा आया और बोला — "तुम हर एक पर विश्वास कर लेते हो इसी लिये तुम बेवकूफ बन जाते हो।

अनन्सी मकड़े ने तुम्हारी अँगूठी चुराने के लिये अपना भतीजा तुम्हारे पास भेजा था और अब वह अँगूठी उसके पास है। उस अँगूठी की सहायता से उसने भी एक बहुत बड़ा गाँव बसा लिया है जो तुम्हारे गाँव से दोगुना बड़ा है और तुम्हारे गाँव से भी ज़्यादा सुन्दर है।"

[12] Translated for the words "Spirit of the Forest"

"इसका मतलब यह है कि वही मेरी अँगूठी चुरा कर ले गया है। पर अब आप मुझे यह तो बताइये कि मैं अपनी अँगूठी उससे वापस कैसे लूँ?"

"अब तुम अपना कुत्ते ओकामैन और अपने बिल्ले ओका[13] को अनन्सी के घर भेजो। वे ही तुम्हारी इस समस्या को सुलझा सकते हैं।" इतना कह कर जंगल की आत्मा वहाँ से चला गया।

लड़का अपने घर गया और अपने कुत्ते और बिल्ले को बुलाया ताकि वह उनको उनका काम समझा सके।

इस बीच अनन्सी मकड़ा भी एक आत्मा के पास गया तो उसने उसको दो आने वालों के बारे में चौकन्ना कर दिया। यह सुन कर उसने अपना प्लान बनाया।

उसने बहुत बढ़िया और बारीक पिसा मॉस लिया, उसमें एक रस मिलाया जिससे जो कोई भी उसे खाता वह गहरी नींद सो जाता। यह करके उसने उस मॉस को अपने घर तक आने वाली सड़क पर बिखेर दिया और उन आने वालों के इन्तजार में बैठ गया।

ओकामैन और ओका दोनों ही अनन्सी के घर के लिये चल पड़े थे और चलते चलते वे अब उस जगह पर आ गये थे जहाँ से सड़क दो तरफ जाती थी।

[13] Ocraman Dog and Ocra Cat

वहाँ आ कर उन्होंने पहले एक तरफ सूँघा फिर दूसरी तरफ सूँघा। तुरन्त ही उन दोनों को उस मॉस की खुशबू आ गयी जो अनन्सी ने बॉयी तरफ की सड़क पर बहुत सारा बिखराया हुआ था।

बिल्ला बोला — "यहाँ कुछ अजीब सा है जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। चलो दॉयी तरफ से चलते हैं।"

पर कुत्ता मॉस की खुशबू को नहीं छोड़ सका। उसने बिल्ले की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वह बॉयी तरफ की सड़क ले कर चल दिया।

रास्ते में उसको बहुत सारा मॉस मिल गया तो उसने उसे तुरन्त ही पेट भर कर खा लिया। उसको खाते ही तो उसको सो ही जाना था सो उसे खाते ही वह सो गया।

पर बिल्ले ने दॉयी सड़क ली और कुछ देर बाद ही वह अनन्सी के गॉव पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने अनन्सी का घर ढूँढा और वह उसमें अन्दर चला गया। उसने देखा कि अनन्सी तो पत्तियों के मुलायम कालीन पर पैर फैला कर सो रहा है।

मौका अच्छा था। बिल्ले ने अँगूठी के लिये उसका सारा घर ढूँढ मारा पर उसको वह अँगूठी नहीं मिली।

लेकिन फिर उसको वह अँगूठी एक मजबूत बक्से में रखी मिल गयी। पर जैसे ही वह वह अँगूठी निकालने लगा तो उसे लगा कि अनन्सी तो जागने वाला है सो उसने अँगूठी वापस रख कर वह बक्सा बन्द कर दिया और वहीं पास में छिप गया।

पर तभी एक छोटा सा चूहा उसके पास से गुजरा तो उसने उसे तुरन्त ही अपने पंजे में दबोच लिया।

चूहा गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी करके मुझे मत खाओ।"

बिल्ला बोला — "यह तो मैं सोच भी नहीं सकता कि मुझे चूहा मिले और मैं उसे न खाऊँ पर अगर तुम मेरी सहायता करोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

"सहायता? कैसी सहायता? मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगा। बताओ क्या सहायता चाहिये?"

"क्या तुमको वह मजबूत बक्सा दिखायी दे रहा है? इस अनन्सी मकड़े ने मेरे मालिक से चुरायी हुई एक अँगूठी उसमें रखी हुई है। तुम जाओ और बिना कोई आवाज किये उसमें से वह अँगूठी निकाल कर मुझे ला कर दे दो। मैं तुमको नहीं खाऊँगा।"

चूहे को दोबारा नहीं कहना पड़ा। वह बिना कोई आवाज किये वहाँ से खिसक गया और उस मजबूत बक्से के ऊपर पहुँच गया। तुरन्त ही उसने उस बक्से को अपने तेज़ दाँतों से काटना शुरू कर दिया।

जैसे ही उसने उसमें छेद कर लिया वह उस बक्से में घुस गया, अपनी पूँछ में वह अँगूठी फँसायी और बिल्ले के पास वापस आ गया। ओका ने चूहे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने वायदे के मुताबिक उसको छोड़ दिया।

बिल्ला वह अँगूठी ले कर उसी जगह पर वापस आया जहाँ वह कुत्ते को छोड़ कर गया था। वहाँ आ कर उसने देखा कि कुत्ता तो बड़ी गहरी नींद सो रहा था।

वह बोला — "सो तुम यहाँ सो रहे हो। और यहाँ जो इतना सारा माँस पड़ा हुआ था वह कहाँ है?"

ओकामैन कुत्ता बोला — "इसका क्या मतलब है कि मैं सो रहा था? मुझे बस कुछ अच्छा सा नहीं लग रहा था सो मैं आँखें बन्द किये पड़ा था। और जहाँ तक माँस का सवाल है माँस तो यहाँ कोई था ही नहीं। हम लोगों को गलती लग गयी थी कि यहाँ माँस था।"

बिल्ले को लगा कि ओकामैन कुत्ता अपनी गलती छिपाने के लिये झूठ बोल रहा था पर उसने भी उसको ऐसा दिखाया जैसे उसने उसका विश्वास कर लिया हो।

फिर कुत्ते ने उससे अँगूठी के बारे में पूछा तो उसने उसको सब कुछ सच सच बता दिया। सुन कर कुत्ता बोला — "बहुत अच्छे। पर अब हमको तो अभी नदी पार करनी है जहाँ से वह सबसे गहरी है। तुम तो और सभी बिल्लों की तरह से पानी पसन्द नहीं करते तो तुम तो उसे कूद कर ही पार करोगे।

इस तरह कूद कर नदी पार करने में वह अँगूठी तुम्हारे पास से गिर भी सकती है। इसलिये अच्छा यही होगा अगर तुम उसे मुझे दे दो। मुझे तैरना आता है। मैं उसको अपने मुँह में रख लूँगा और वह नदी तैर कर पार कर लूँगा। वहाँ वह सुरक्षित रहेगी।"

बिल्ले को लगा कि कुत्ता ठीक कह रहा था सो उसने वह अँगूठी कुत्ते को दे दी।

जब वे दोनों नदी के किनारे पहुँचे तो कुत्ता तो नदी में कूद गया ओर तैरने लगा पर बिल्ला एक बड़े से पेड़ के तने पर कूद गया जो नदी के बहाव में बहा जा रहा था।

वहाँ से उसने एक और कूद लगायी और वह नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गया। पर कुत्ता अभी नदी के बीच में ही था कि वह तैरते तैरते थकने लगा सो उसने साँस लेने के लिये अपना थोड़ा सा मुँह खोला कि वह अँगूठी उसके मुँह से निकल गयी और नदी में जा गिरी और पानी में डूब गयी।

जैसे ही कुत्ता नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा तो ओक्रामैन ने उससे पूछा — "अँगूठी कहाँ है?"

ओक्रामैन कुछ दुखी सा बोला — "वह तो नदी के बीच में ही मेरे मुँह से नीचे गिर पड़ी।"

इस पर पहले तो बिल्ला बहुत गुस्सा हुआ पर फिर बाद में कुछ शान्त हो गया। पर तभी एक बड़ी मछली किनारे पर आयी तो ओक्रामैन ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसकी पूँछ पकड़ कर उससे पूछा — "क्या तुमने कोई अँगूठी देखी है?"

कहते हुए उसने उसकी पूँछ को अपने पंजे में और कस कर पकड़ लिया।

अब उस मछली के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपना मुँह खोले। और जैसे ही उसने अपना मुँह खोला अँगूठी उसके मुँह से बाहर निकल पड़ी। ओकामैन ने तुरन्त ही अँगूठी उठा ली और मछली को वापस पानी में फेंक दिया।

अब ओकामैन की बारी थी। उसने बिल्ले से प्रार्थना की कि वह मालिक से जा कर यह न कहे कि रास्ते में क्या हुआ था। पर बिल्ले ने उसको कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह उससे बहुत गुस्सा था।

सो जब वे दोनों घर वापस आये तो कुत्ते ने यह सोच कर कि बिल्ला मालिक से सब कुछ कह देगा मालिक से इस तरह से कुछ कहानी बनायी जैसे उसकी सारी मुश्किलों का जिम्मेदार बिल्ला ही था।

पर लड़के ने जंगल की आत्मा से सब कुछ सच सच जान लिया था इसलिये वह कुत्ते के किसी भी बहाने को नहीं सुन रहा था। उसने कुत्ते को बहुत डॉटा और बिल्ले को इनाम दिया।

उसने बिल्ले को घर के अन्दर रखा जहाँ वह हमेशा गरम रहता था और कुत्ते को घर के बाहर चौकीदारी के लिये तैनात कर दिया।

तब से बिल्लियाँ घर में रहती हैं और कुत्ते घर के बाहर चौकीदारी करते हैं।

2 मारने वाली डंडी[14]

यह बहुत दिनों पुरानी बात नहीं है जब अनन्सी मकड़ा अपनी पत्नी असो और तीन बच्चों के साथ जंगल के पास वाले एक घर में रहता था।

उसके बच्चों के नाम थे – पतली–टॉग, पूरा–पेट और बड़ा–सिर।[15] एक अच्छे पिता होने के नाते वह रोज ही सुबह सुबह खाना ढूँढने के लिये घर से बाहर निकल जाता था।

एक दिन जब वह अपना खाना ढूँढने निकला हुआ था तो एक झाड़ी के पास उसको एक बहुत ही चमकती हुई और बहुत ही साफ प्लेट मिली। उसको देखते ही वह बोला — "वाह, कितनी सुन्दर प्लेट है।"

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वह प्लेट कुछ नाराजी से बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

इस पर अनन्सी ने उत्सुकता से पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

प्लेट बोली — "मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

[14] The Spanking-Switch – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni.

[15] Asso was Anansi's wife's name. His children's names were – Skinny-Legs, Full-Belly and Big-Head.

यह सुन कर अनन्सी ने कहा — "अच्छा भरो और खाओ तो फिर देखते हैं।" तुरन्त ही वह कटोरा गरम गरम सूप से भर गया।

अनन्सी ने भी अपना समय बरबाद नहीं किया और तुरन्त ही उस सूप को सारा का सारा पी गया।

सूप पी कर उसने अपने भरे हुए पेट पर हाथ फेरा और प्लेट से कहा — "तुम तो एक जादू की चीज़ हो और हर उस चीज़ की तरह जो जादू की होती है उसकी ताकत को भी लेने वाला कुछ होता है। तो तुम मुझे वह बताओ कि वह क्या है जो तुम्हारी ताकत को ले लेगा।"

प्लेट बोली —"यह तो तुम ठीक कह रहे हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश[16] के प्याले से डर लगता है।

अनन्सी बोला — "ठीक है।"

और उस प्लेट को ले कर घर चल दिया।

[16] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes – see the picture above of its one kind.

जब वह घर वापस आया तो वह सबकी ऑख बचाता हुआ अपने घर के सबसे ऊपर वाले कमरे[17] में गया और उस प्लेट को वहॉ छिपा कर रख दिया।

उसके बाद वह चुपचाप फिर से जंगल की तरफ चला गया। वहॉ जा कर उसने अपना खाना इकट्ठा किया और उसे ले कर घर आ गया।

उसकी पत्नी असो ने उसे पकाया और पका कर सबको खाने के लिये बुलाया तो अनन्सी बोला — "नहीं प्रिये, मुझसे ज़्यादा खाने की जरूरत तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बॉट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।"

असो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज उसका पति खाना नहीं खा रहा क्योंकि उसको मालूम था कि उसके पति की भूख तो बहुत थी। वह तो हमेशा से ही बहुत खाता था।

पर इस समय वह कहीं नाराज न हो जाये इसलिये उसने उससे कुछ नहीं कहा और उसका हिस्सा बच्चों में बॉट दिया। वह और बच्चे खाना खा कर सोने चले गये।

[17] Translated for the Word "Attic". Attic is a room or space that is just below the roof of a building and that is often used to store things, but sometimes it is used to live there if it is big enough. Normally it is in a conical shape – see its picture above.

इस बीच अनन्सी कुछ बहाना बना कर बाहर वाली सीढ़ियों से अपने घर के ऊपर वाले कमरे में गया और उस प्लेट से धीरे से कहा — "यह प्लेट तो सचमुच में बहुत सुन्दर है।"

प्लेट फिर बोली — "मैंने तुमसे कहा न कि मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

"अरे हॉ ठीक है मैं तो भूल ही गया। पर फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

"तो भरो और खाओ और फिर देखते हैं।"

तुरन्त ही वह प्लेट भाप निकलते हुए गर्म मॉस के टुकड़ों और उनके सूप से भर गयी। अनन्सी ने तुरन्त ही उसको खा लिया।

इस तरह रोज वह छिप कर अपने ऊपर वाले कमरे में आता और पेट भर कर खाना खाता और नीचे चला जाता। रोज वह उस प्लेट को यह दिखाता कि वह उसका नाम भूल गया है, रोज वह उसकी जॉच करता और इस तरह से रोज उसका खाना पक्का था।

पर एक दिन उसके बड़े बेटे पतली–टॉग ने देखा कि आजकल उसका पिता घर में कभी खाना नहीं खाता था पर फिर भी उसका वजन एक औंस भी कम नहीं हुआ था। उल्टे वह तो और ज़्यादा ताकतवर होता जा रहा था।

उसको लगा कि उसके पिता के पास खाना खाने की कोई और तरकीब थी। सो उसने तय किया कि अबसे वह उसके आने जाने पर कड़ी नजर रखेगा।

कुछ समय बाद अनन्सी को जब लगा कि घर में सब सो गये हैं तो वह सबकी नजर बचा कर चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में गया।

पर उसको यह मालूम नहीं था कि उसका बड़ा बेटा पतली टॉग उसके हर काम पर नजर रखे था। वह जब अपने ऊपर वाले कमरे में गया था तब भी उसके बेटे ने उसको देख लिया था।

एक दिन जब अनन्सी खाना लाने के लिये जंगल गया तो उसका बड़ा बेटा ऊपर गया। वहॉ जा कर उसने इधर देखा उधर देखा तो उसे वहॉ और तो कोई खास चीज़ रखी दिखायी नहीं दी बस एक प्लेट रखी दिखायी दे गयी।

उसने अपनी मॉ और भाइयों को वहॉ बुला लिया और सबने वहॉ बात करनी शुरू कर दी।

पतली–टॉग बोला — "इस प्लेट के बारे में तुम क्या सोचते हो? क्या यह सुन्दर नहीं है?"

यह सुनते ही प्लेट बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग आश्चर्य में पड़ गये।

पूरे–पेट ने पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

इस पर बड़ा–सिर बोला — "तो भरो और खाओ और फिर देखते हैं।"

बड़े–सिर के यह कहते ही वह प्लेट मूँगफली और पाम के सूप से भर गयी। बच्चों को वह सूप देखने में बड़ा स्वादिष्ट लग रहा था सो वे उसको पीने ही वाले थे कि...।

माँ ने सोचा कि यह प्लेट तो जादू की है सो उसने इशारे से बच्चों को वह सूप पीने से रोक दिया।

फिर उसने उस प्लेट से कहा — "क्योंकि तुम जादू की प्लेट हो इसलिये तुम्हारे जादू का कोई तोड़ तो होगा। मुझे बताओ कि वह क्या है ताकि हम अनजाने में तुमको कोई नुकसान न पहुँचा सकें।"

प्लेट बोली — "यह तो तुम ठीक कहती हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश के प्याले से डर लगता है।"

तब असो ने बच्चों से कहा — "सो मेरे बच्चों, तो तुम्हारे पिता हम लोगों से खेल खेलना चाहते हैं। यह खेल अब ज़्यादा दिन तक नहीं चलेगा।

अब हम उनको सबक सिखायेंगे।"

और उसने बच्चों से बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई और एक छोटे कैलेबाश का प्याला लाने के लिये कहा।

पतली–टॉगें जो अपने आपसे बहुत सन्तुष्ट था नीचे रसोईघर में गया और दोनों चीज़ें ले कर सीटी बजाता हुआ ऊपर वाले कमरे में आ गया।

मॉ ने वह रुई उस प्लेट से छुआ दी तो वह बोली "उफ़"। फिर उसने वह कैलेबाश का छोटा प्याला भी उस प्लेट से छुआ दिया तो वह फिर से बोली "उफ़"।

उसके बाद वे सब एक एक करके नीचे चले गये और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगे। कुछ देर बाद ही अनन्सी रात का खाना ले कर घर आ गया।

जब उसकी पत्नी ने रोज की तरह उसको खाने के लिये बुलाया तो रोज की तरह ही उसने उससे कहा — "मुझसे ज़्यादा जरूरत खाने की तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बॉट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।"

सो मॉ और बच्चों ने खाना खा लिया और वे सोने चले गये। अनन्सी जैसे रोज जाता था उसी तरह से चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में चल दिया।

वहॉ जा कर उसने वह प्लेट अपने हाथ में ली और बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर उसकी प्लेट ने तो उसको कोई जवाब नहीं दिया।

वह फिर बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला।

"यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर वह प्लेट तो कोई जवाब ही नहीं दे रही थी।

तब अनन्सी ने कमरे में इधर उधर देखा तो उसको वहाँ एक कोने में बन्दूक की नली को बन्द करने वाली रुई और एक कैलेबाश का छोटा प्याला दिखायी दे गया।

अनन्सी को लगा कि असो और बच्चों को उसकी इस प्लेट का पता चल गया है। पर अनन्सी को यह महसूस ही नहीं हुआ कि इसमें जितनी गलती उसकी है उतनी ही गलती उसके परिवार की भी है कि उसके परिवार ने केवल उत्सुकता के लिये ही उसका इतना नुकसान कर दिया था।

वह अपने ऊपर के कमरे से नीचे आया और उनकी इस बात का बदला लेने के लिये फिर से जंगल चल दिया। काफी दूर चलने के बाद वह थक गया तो सुस्ताने के लिये एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया।

फिर वह वहीं लेट गया और अपने आप ही उनको धमकी देने वाले प्लान के बारे में बुड़बुड़ाने लगा। कुछ देर बाद उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं तो उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

उसने सपने में देखा कि पेड़ पर बैठी एक चिड़िया उसको यह सलाह दे रही थी कि उसको अपनी ऐसे बेवफा परिवार से बदला कैसे लेना चाहिये।

उसके सपने में वह उससे कह रही थी — "अनन्सी, तुम्हारे पास जो पत्तियॉ पड़ी हैं उनको हटाओ। वहॉ तुमको एक अच्छी साफ चिकनी डंडी मिलेगी। तुम उसको उठा लो।"

सपने में ही अनन्सी ने अपने पास पड़ी पत्तियॉ हटायीं तो उसको चिड़िया की बतायी हुई वह डंडी मिल गयी। उसने उसको उठा लिया।

चिड़िया फिर बोली — "अब तुम इससे कुछ अच्छे शब्द बोलो।"

तो अनन्सी बोला — "ओ मेरी सुन्दर छोटी डंडी।"

वह डंडी बोली — "मेरा नाम "मेरी सुन्दर छोटी डंडी" नहीं है।"

अनन्सी बोला — "तो फिर अपना नाम बताओ।"

"मेरा नाम "मारने वाली डंडी है।"

"अगर ऐसा है तो थोड़ा सा मारो और फिर मैं देखता हूॅ।"

डंडी को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी बस उसने तो आव देखा न ताव और अनन्सी को बॉये दॉये मारना शुरू कर दिया।

बेचारे अनन्सी को पता ही नहीं था कि वह अब क्या करे। वह तो उसकी मार से बचने के लिये बस आगे पीछे कूदता रहा और

उफ ओह हाय चिल्लाता रहा पर वह डंडी उसको मारने से नहीं रुकी।

अनन्सी कराहता हुआ बोला "बचाओ। क्या इसको रोकने का कोई तरीका नहीं है?"

चिड़िया पेड़ के ऊपर से ही चिल्लायी — "अनन्सी, क्योंकि तुम बहुत ही बेवकूफ हो इसलिये तुमको यही मिलना चाहिये। पर अभी के लिये इतना ही काफी है। बोलो "सावधान" और यह डंडी मारना बन्द कर देगी।

अनन्सी चिल्लाया — "सावधान, सावधान" और डंडी ने तुरन्त ही मारना बन्द कर दिया।

अब अनन्सी को लगा कि उसको अपने परिवार से बदला लेने का तरीका मिल गया है। उसने अपनी वह मारने वाली डंडी उठायी और अपने घर चल दिया।

घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी को रात का खाना पकाने के लिये कुछ दिया और कहा कि उसको पका कर वह खुद खा ले और बच्चों को खिला दे क्योंकि उसको उस खाने की जरूरत नहीं थी। उसने यह भी कहा कि "अगर उन लोगों ने खा लिया तो समझो उसने खा लिया।

कह कर वह अपनी डंडी ले कर अपने ऊपर वाले कमरे में चला गया। इस बार उसने यह ख्याल रखा कि उसकी पत्नी और बच्चे उसकी डंडी देख लें।

ऊपर वाले कमरे में पहुँच कर उसने अपनी डंडी कमरे के एक कोने में रख दी दरवाजा खुला छोड़ दिया और एक कोने में इन्तजार में बैठ गया। एक घंटा गुजर गया। फिर आया उसका बेटा पतली–टॉग।

वहॉ आ कर उसने ढूँढना शुरू किया तो उसको एक कोने में रखी डंडी मिल गयी। वह तुरन्त ही अपनी मॉ और भाइयों को बुलाने दौड़ा।

उसने उनसे पूछा — "आप लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं? क्या यह एक सुन्दर डंडी नहीं है?"

डंडी बोली — "मेरा नाम सुन्दर डंडी नहीं है।"

पूरा–पेट बोला — "तो फिर क्या है तुम्हारा नाम?"

"मेरा नाम है "मारने वाली डंडी"।"

बड़ा–सिर की समझ में ही नहीं आया कि अगर उसने वैसा बोला तो वह डंडी उसको मारने लगेगी वह बोला — "तो फिर थोड़ा मारो तो फिर देखते हैं।"

काश उसने यह न कहा होता। उसके यह कहते ही डंडी ने सबको दॉये बॉये मारना शुरू कर दिया। चारों तरफ से आह ओह हाय की आवाजें आने लगीं।

यह देख कर अनन्सी ने सोचा "यही तुम लोगों के लिये ठीक है।" जब उसको लगा कि अब काफी हो गया तो वह बोला "सावधान सावधान"।

यह सुनते ही डंडी का मारना रुक गया और अनन्सी अपने सपने से जाग गया।

3 अनन्सी और काई ढका पत्थर[18]

एक बार की बात है कि अनन्सी मकड़ा एक जंगल में से हो कर बस चलता जा रहा था, चलता जा रहा था, चलता जा रहा था कि उसकी नजर किसी चीज़ पर पड़ी।

यह चीज़ एक बड़ा अजीब सा पत्थर था जो काई से ढका हुआ था। अनन्सी बोला — "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

कि तभी फट। सब कुछ अँधेरा हो गया। अनन्सी नीचे गिर गया और गिरते ही बेहोश हो गया।

करीब एक घंटे बाद अनन्सी की आँख खुली तो उसका सिर घूम रहा था। वह अभी भी यही सोच रहा था कि उसको हुआ क्या था। वह क्यों गिर पड़ा था।

सो उसने शुरू से सोचा कि वह रास्ते पर चलता जा रहा था तब उसने कुछ देखा। वह रुका और उसने कहा — "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

कि तभी फिर से फट। फिर सब कुछ अँधेरा हो गया और अनन्सी फिर से नीचे गिर गया और गिरते ही फिर से बेहोश हो गया।

---

[18] Anansi and the Moss-Covered Rock. A folktale from Western Africa.
Adapted from the book : "Anansi and the Moss-Covered Rock". By Eric A Kimmel.

करीब एक घंटे बाद जब अनन्सी की ऑख खुली तो उसका सिर तभी भी घूम रहा था। पर अब उसकी समझ में आ गया था कि उसके साथ क्या हुआ था।

"हूँ, तो यह जादुई पत्थर है। जब भी कोई इसके पास आता है और ये जादुई शब्द कहता है – "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।" तो वह गिर कर बेहोश हो जाता है।

यह जानना तो बड़े काम की बात है। और अब मैं जान गया कि इसको कैसे इस्तेमाल करना है।"

यह सोचते हुए और अपने दिमाग की तेज़ी पर मुस्कुराते हुए अनन्सी जंगल में से हो कर फिर चला, फिर चला, फिर चला और एक शेर के घर आ पहुँचा।

शेर अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठा हुआ था। उसके पैरों के पास बहुत सारे याम[19] बिखरे पड़े थे। अनन्सी को याम बहुत अच्छे लगते थे पर अपने आलसीपन की वजह से न तो वह उनको उगाता था और न ही उनको खोदता था।

सो अनन्सी ने शेर से कहा — "हलो शेर जी। आप कैसे हैं? आज का दिन बहुत गरम है। है न?"

[19] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries – see its picture above.

शेर बोला — "हॉ अनन्सी। आज तो वाकई बहुत ही गरम दिन है।"

अनन्सी बोला — "मैं तो जंगल के पेड़ों की छॉह में घूमने के लिये जा रहा हूॅ। क्या आप भी मेरे साथ चलना पसन्द करेंगे?"

शेर बोला — "हॉ हॉ जरूर। गरमी में वहॉ घूमना अच्छा रहेगा।"

सो शेर और अनन्सी दोनों जंगल में चलते गये, चलते गये और चलते गये। अनन्सी शेर को उस जंगल में एक खास जगह ले आया और शेर से पूछा — "शेर जी क्या आपको भी वह दिखायी दे रहा है जो मैं देख रहा हूॅ?"

शेर बोला — "हॉ अनन्सी। अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

बस शेर का इतना कहना था कि शेर तो धम्म से नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया।

अनन्सी को मौका मिल गया वह तुरन्त शेर के घर दौड़ा गया और उसके सारे याम वहॉ से उठा कर अपने घर ले गया।

एक घंटे के बाद जब शेर होश में आया तब भी उसका सिर चकरा रहा था और अनन्सी वहॉ से गायब था। वह तो वहॉ कहीं भी दिखायी नहीं दे रहा था।

सो वह बेचारा वहॉ से खुद ही अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसने देखा कि उसके तो सारे याम वहॉ से जा चुके थे। यह देख कर शेर बहुत दुखी हुआ।

पर अनन्सी बहुत खुश था। वह अपनी इस चाल को फिर से खेलने के लिये बिल्कुल इन्तजार नहीं कर पा रहा था। सो वह जंगल में से हो कर फिर चला और चलता गया, चलता गया और चलता गया।

इस बार वह एक हाथी के घर आया। हाथी भी अपने घर के बाहर के चबूतरे पर बैठा था। उसके पैरों के पास बहुत सारे केले पड़े हुए थे।

अनन्सी को केले भी बहुत अच्छे लगते थे पर वह अपने आलसीपन की वजह से न तो उनको वह खुद उगा पाता था और न ही तोड़ पाता था। सो उसने हाथी के केले लेने की सोची।

वह हाथी के पास गया — "गुड डे हाथी जी। आज का दिन कितना गरम है। है न?"

हाथी बोला — "हॉ अनन्सी बिल्कुल है। आज का दिन तो वाकई बहुत ही गरम है।"

अनन्सी बोला — "मैं तो जंगल के पेड़ों की छॉह में घूमने के लिये जा रहा हूँ। क्या आप भी मेरे साथ चलना पसन्द करेंगे?"

हाथी बोला — "हॉ हॉ जरूर। मुझे अपने साथ ले चलने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

सो हाथी और अनन्सी दोनों जंगल में चलते गये, चलते गये और चलते गये। अनन्सी हाथी को वहॉ एक खास जगह ले आया और हाथी से पूछा — "हाथी जी, क्या आपको भी वह दिखायी दे रहा है जो मैं देख रहा हूँ?"

हाथी बोला — "हॉ अनन्सी। अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

बस हाथी का इतना कहना था कि वह तो धम्म से नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया।

अनन्सी तुरन्त हाथी के घर दौड़ा गया और उसके सारे केले वहॉ से उठा कर अपने घर ले गया।

एक घंटे के बाद हाथी को होश आया तो उसका सिर चकरा रहा था और अनन्सी वहॉ से गायब था। वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

सो वह अकेला ही अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसके सारे केले वहॉ से जा चुके थे। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ।

पर अनन्सी बहुत खुश था। वह अपनी इस चाल को फिर से खेलने के लिये बिल्कुल इन्तजार नहीं कर पा रहा था।

इस बार उसने अपनी यह चाल पहले हिप्पो पर चलायी, फिर राइनो पर चलायी, फिर जिराफ पर चलायी, और फिर ज़ीब्रा पर

चलायी। और इन्हीं पर नहीं बल्कि जितने जानवरों पर वह चला सकता था उतने जानवरों पर चलायी।

पर एक छोटी जंगली हिरनी यह सब एक झाड़ी के पीछे से खड़ी खड़ी देख रही थी। यह हिरनी इतनी छोटी और शरमीली थी कि इसको देख पाना भी मुश्किल था।

उसने अनन्सी की सब नीच चालें बार बार देखीं और फिर सब दूसरे जानवरों को बुलाया। उसको लगा कि अब समय आ गया है जब अनन्सी को उसके कामों का सबक मिलना ही चाहिये।

वह छोटी जंगली हिरनी जंगल में काफी दूर तक चली गयी जहॉ नारियल[20] के पेड़ उग रहे थे। वह उनमें से एक नारियल के पेड़ पर चढ़ गयी और वहॉ से उसने बहुत सारे नारियल तोड़ तोड़ कर नीचे फेंक दिये।

उन नारियलों को एक टोकरी में भर कर वह अपने घर ले गयी और अपने घर के आगे के चबूतरे पर फैला दिया। फिर वह वहीं उनके पास बैठ गयी और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगी।

कुछ देर बाद ही अनन्सी उधर आ निकला। जब उसने छोटी जंगली हिरनी के उन बहुत सारे नारियलों को देखा तो उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

[20] Translated for the word “Coconut” – see a picture of a coconut tree above.

उसको नारियल के अन्दर का सफेद मुलायम गूदा खाना बहुत अच्छा लगता था पर आलसी होने की वजह से वह न तो नारियल उगाता था और न ही तोड़ता था।

इतने सारे नारियल सामने पड़े देख कर वह उस छोटी जंगली हिरनी से बोला — "हलो छोटी जंगली हिरनी। आज का दिन बहुत गरम है। है न?"

छोटी जंगली हिरनी मुस्कुरायी और बोली — "हॉ अनन्सी भाई, है तो। आज का दिन वाकई बहुत गरम है।"

अनन्सी बोला — मैं जंगल में ठंडी हवा खाने जा रहा हूॅ क्या तुम भी मेरे साथ आना पसन्द करोगी?"

"यकीनन अनन्सी भाई। मैं भी चलती हूॅ। इस गरमी में जंगल में घूमने में तो बहुत ही अच्छा लगेगा। चलो।"

सो अनन्सी और वह छोटी जंगली हिरनी दोनों जंगल में घूमने चल दिये। जंगल की ठंडक में वे चलते गये, चलते गये और चलते गये जब तक अनन्सी उस छोटी जंगली हिरनी को एक खास जगह नहीं ले आया।

एक जगह आ कर वह छोटी जंगली हिरनी से बोला — "ओ छोटी जंगली हिरनी, उधर देखो। क्या तुम वह देख रही हो जो मैं देख रहा हूॅ?"

वह छोटी जंगली हिरनी अनन्सी की चाल के बारे में सब कुछ जानती थी सो उसने उधर की तरफ देखने का बहाना किया जिधर अनन्सी ने उसको इशारा किया था और बोली — "नहीं अनन्सी भाई, मुझे तो कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

अनन्सी बोला — "तुमको वह दिखायी देना ही चाहिये ओ छोटी जंगली हिरनी। ज़रा ठीक से देखो न।"

छोटी जंगली हिरनी ने फिर देखने की कोशिश की और बोली — "नहीं अनन्सी मुझे तो अभी भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

अनन्सी को अब थोड़ा गुस्सा आ गया क्योंकि वह काई लगा पत्थर तो सामने ही पड़ा था और वह छोटी जंगली हिरनी कहे जा रही थी कि उसको कुछ दिखायी नहीं दे रहा।

पर अपने गुस्से को काबू में रखते हुए अनन्सी फिर बोला — "ओ छोटी जंगली हिरनी, तुमको वह दिखायी देना ही चाहिये। तुम उधर देखो न जिधर मैं तुमको इशारा कर रहा हूँ। क्या अब तुम्हें कुछ दिखायी दे रहा है?"

बेचारी छोटी जंगली हिरनी ने फिर देखने की कोशिश की और बोली — "नहीं अनन्सी भाई, मुझे तो अभी भी कुछ दिखायी नहीं देरहा।"

अनन्सी ने अपने पैर पटके और बोला — "तुम झूठ बोल रही हो। तुमको दिखायी पड़ रहा है पर तुम बस कहना नहीं चाह रही हो।"

छोटी जंगली हिरनी ने भोलेपन से पूछा — "अनन्सी भाई मैं क्या नहीं कहना चाह रही?"

"तुम जानती हो।"

"तो क्या वह मुझे कहना ही चाहिये?"

अनन्सी गुस्से में बोला — "हॉ।"

"ठीक है तो मैं तुमको खुश करने के लिये कहूँगी। "तुमको तो मालूम ही है कि मुझे क्या कहना चाहिये...।" अब मैंने कह दिया क्या तुम इससे सन्तुष्ट हो?"

अनन्सी चिल्लाया "नहीं।" तुमको यह नहीं कहना है कि "तुमको तो मालूम ही है कि मुझे क्या कहना चाहिये...।"

तो उसने पूछा — "तब फिर मैं क्या कहूँ?"

अनन्सी को तो यह मालूम था कि उसको वह खुद नहीं कहना है पर अपने जोश में यह भूल गया था सो बोल पड़ा "तुम कहो कि "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

बस जैसे ही अनन्सी ने यह कहा अनन्सी धम्म से नीचे गिर गया और गिर कर बेहोश हो गया। छोटी जंगली हिरनी दौड़ी दौड़ी उन सब जानवरों के पास गयी जिन जिनको अनन्सी ने धोखा दिया था।

सब एक साथ अनन्सी के घर गये और अपनी अपनी चीज़ें उसके घर से उठा लाये जो उसने उनके घरों से चोरी की थीं।

जब एक घंटे बाद अनन्सी होश में आया तो उसका सिर भी चकरा रहा था। छोटी जंगली हिरनी वहॉ से गायब थी। वह उसको वहॉ कहीं दिखायी नहीं दे रही थी।

जब अनन्सी अपने घर पहुॅचा तो उसका घर वैसा ही खाली पड़ा था जैसा कि उस काई से ढके पत्थर के मिलने से पहले पड़ा था। अपना घर इस हालत में देख कर अनन्सी बहुत दुखी हुआ पर वह क्या कर सकता था।

पर अगर तुम सोचते हो कि इस घटना से अनन्सी को कोई सीख मिल गयी होगी तो तुम गलती पर हो। वह तो अभी भी वैसा ही है और आगे भी वैसा ही रहेगा।

वह आज तक दूसरों के साथ चाल खेलने से बाज़ नहीं आता।

4 अनन्सी और खाने का बरतन[21]

जैसा कि समय समय पर होता रहता है एक बार की बात है कि बहुत दिनों तक बारिश नहीं हुई। आसमान में बादल आते पर जल्दी ही गायब हो जाते और दिन ब दिन बहुत ज़ोर की धूप निकलती रहती।

इससे पौधों के छोटे छोटे अंकुरों को बहुत नुकसान पहुँचता और जमीन भी जलती रहती। जमीन जल जल कर या तो बहुत सख्त हो जाती या फिर गरम रेत बन जाती और या फिर और सख्त चट्टान जैसी बन जाती।

बहुत जल्दी ही लोगों के पास जो खाना था वह खत्म होने लगा। बहुत सारे जानवर मर गये। जो बचे थे वे पानी की तलाश में इधर उधर चले गये।

पानी न होने की वजह से सारे खेत बरबाद हो गये। शिकार से भी कुछ हासिल नहीं होता था क्योंकि बहुत सारे जानवर खाने पीने की तलाश में वहाँ से चले गये थे। बाकी जो बचे थे वे खाने की कमी से इतने दुबले पतले हो गये थे कि उनके ऊपर माँस ही बहुत कम था।

[21] Anansi and the Feeding Pot – a folktale from Ghana, Africa.
This story taken from the book "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

अनन्सी के गॉव में हर आदमी भूख से परेशान था। हर आदमी कमजोर था। बहुत सारे लोग बीमार थे। वे लोग रोज सरदार के ऑगन में बड़े लोगों को सुनने के लिये इकट्ठा होते।

वे वहॉ इस बारे में बात करने के लिये इकट्ठा होते थे कि वे इस हालत से कैसे निकल सकते थे। कैसे सबकी जान बचा सकते थे। पर उनको जल्दी ही पता चल गया कि वे कुछ भी नहीं कर सकते थे सो सरदार ने अपनी मीटिगें बन्द कर दीं।

उसी दिन वह दिन था जब अनन्सी का बेटा टिकूमा[22] गायब हो गया। अनन्सी ने अपने सिर पर हाथ मारा और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा — "ओह मेरे बेटे। तुम तो किसी भूखे चीते का शिकार बन गये होगे। क्या मेरी किस्मत में यही लिखा है कि मैं अपने बच्चों को इस तरह मरते देखूँ?"

तीन दिन गुजर गये। जब अनन्सी का बेटा वापस नहीं आया तो अनन्सी ने टिकूमा के दफ़न की रस्म करने की सोची।

उसने दफन की रस्म शुरू की। पर वे लोग जब दफन की रस्म कर शुरू ही कर रहे थे और सब लोग वहॉ उस रस्म के लिये इकट्ठा थे तो एक पीली चिड़िया उन सबके सिरों के ऊपर से उड़ी और उसने एक खास गीत गाया।

[22] Ntikuma – name of Anansi's son

"तुम लोग अनन्सी के बेटे टिकूमा के लिये दुख मत करो। उसने मुझे तुमको एक ऐसी खबर ले कर भेजा है जिसको सुन कर तुम लोग नाचने लगोगे, गाने लगोगे और खुशियॉ मनाने लगोगे। इसलिये तुम उसके लिये कोई अफसोस न करो।"

यह सुन कर अनन्सी सोचने लगा कि वह क्या करे तभी भीड़ में से कोई चिल्लाया — "यह आ गया टिकूमा। यह आ गया टिकूमा।"

और वाकई टिकूमा वहॉ था, वह ज़िन्दा था और ठीक था। उसके हाथ में एक छोटा सा बरतन था और वह उसको लिये हुए खुशी खुशी चला आ रहा था। सब उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हो गये।

पर जब उससे यह पूछा गया कि वह इतने दिनों तक कहॉ रहा और उसने क्या किया तो उसने अपने हाथ ऊपर उठा कर वहॉ सबको चुप रहने के लिये कहा।

फिर उसने वह छोटा बरतन जमीन पर रख दिया और ज़ोर से बोला — "ओ छोटे बरतन, ओ छोटे बरतन। इन सबके लिये एक बढ़िया दावत का इन्तजाम करो जिसका खाना खूब गरम हो।"

अचानक चारों तरफ मेजें लग गयीं और उन मेजों पर प्लेटें और कटोरे जिनमें भाप निकलता हुआ गरम गरम खाना रखा था उन मेजों पर सज गये।

नयी पाम की शराब के बहुत सारे कैलेबाश[23] आ गये। सारे लोगों ने जब यह सब देखा तो वे तो इतने खुश हुए कि वे बिना किसी हिचकिचाहट के उन मेजों पर खाना खाने बैठ गये।

सबने खूब पेट भर कर खाना खाया फिर भी उनकी प्लेटों में कुछ खाना बच रहा जो वहॉ पास में रहने वाली चिड़ियों और दूसरे जानवरों को दे दिया गया।

अब यह कहने की तो जरूरत ही नहीं कि टिकूमा अपने गॉव का हीरो बन गया था। उसका वह छोटा सा बरतन अब गॉव भर के लिये रोज खाना बनाता और रोज लोग उन अकाल के दिनों में पेट भर कर खाना खाते।

पर कुछ समय के बाद अनन्सी कुछ नाखुश हो गया। वह अपने ही बेटे टिकूमा के इस मशहूर होने से और गॉव में उसकी इज़्ज़त से जलने लगा।

टिकूमा को अब बड़े लोगों की मीटिंगों में बुलाया जाता और हर आदमी कहता कि वह बहुत ही अक्लमन्द था।

एक शाम अनन्सी ने टिकूमा को बुलाया और उससे कहा — "मुझे यह बताओ टिकूमा कि लोग यह कह रहे हैं कि तुमको कोई

[23] Calabash full of Palm wine – Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes – see the picture of one of its kinds above.

अजीब आदमी उठा कर ले गया था। क्या यह सच है? मुझे सच सच बताओ कि सच में तुम्हारे साथ क्या हुआ था।"

टिकूमा के मुँह से कोई शब्द नहीं निकला पर अनन्सी ने उसको यह बताने पर बहुत जिद की कि उसके साथ क्या हुआ था तो टिकूमा को बताना ही पड़ा — "मैं आपको बताता हूँ पिता जी अगर आप इस बात को राज़ ही रखें तो।"

अनन्सी बोला — "हाँ, मैं उसको राज़ ही रखूँग।"

टिकूमा बोला — "उस दिन सुबह को मुझे बहुत ज़ोर से भूख लगी थी कि तभी मैंने एक छिपकली[24] को देखा। सो मैंने सोचा कि कौन जानता है कि यह छिपकली मेरे लिये एक बहुत अच्छा खाना साबित हो।"

अनन्सी थूकते हुए बोला — "हुँह।"

टिकूमा आगे बोला — "सो मैंने अपनी गुलेल[25] निकाली और उस छिपकली का जंगल तक पीछा किया। पर जब भी मैंने उसको पकड़ने की कोशिश की वह छिप जाता और मुझे उसके पीछे और आगे तक जाना पड़ता।

[24] Translated for the word "Lizard"

[25] Translated for the word "Slingshot" – see its picture above.

जल्दी ही मुझे पता चल गया कि मैं तो उस जंगल में खो गया था। मैं चिल्लाया और तब तक चिल्लाता रहा जब तक मैं अपने शरीर में काफी कमजोरी महसूस नहीं करने लगा।

जब मैं काफी थक गया तो एक बहुत ऊँचे पेड़ के नीचे लेट गया। मुझे लगने लगा कि मैं तो बस अब जल्दी ही मर जाऊँगा। तभी मुझे तीन पाम की गिरी[26] जमीन पर पड़ी दिखायी दीं।

मैंने पाम की उन तीनों गिरियों को उठा लिया और साथ में उनको तोड़ने के लिये एक पत्थर भी उठा लिया ताकि मैं उनके अन्दर की गिरी खा सकूँ।

जब मैंने पहली गिरी तोड़ी तो वह वहीं पास के एक गड्ढे की तरफ लुढ़क गयी और उसमें जा कर गायब हो गयी।

यही हाल मेरी दूसरी गिरी का भी हुआ। अब मेरे पास केवल एक ही गिरी बची थी। मेरे मुँह से निकला — "हे भगवान, मेरी इस गिरी को उस गड्ढे में मत लुढ़का देना।"

मैंने फिर पत्थर उठाया और उसको तोड़ दिया। उसका छिलका तो उड़ गया पर उसका वह छोटा सा फल भी उसी गड्ढे की तरफ लुढ़क गया।

[26] Palm nuts are the nuts found in palm fruits grown on Palm trees – see their picture above. Nut is inside them.

मैं तुरन्त ही उस गड्ढे में कूद गया और उस गिरी का पीछा किया। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे उस गड्ढे की तली तो कभी मिलेगी ही नहीं। पर ऐसा हुआ नहीं। मुझे उसकी तली मिल गयी।

मैं नीचे एक अँधेरी गुफा में जा गिरा जिसमें एक बुढ़िया बैठी हुई थी। मैंने डर कर उस बुढ़िया को नमस्ते की। हालाँकि देखने में तो वह कुछ अजीब सी लग रही थी पर वह थी बहुत दयालु। मैंने उसकी वहाँ दो दिनों तक सेवा की।

फिर उसने मुझे अपने बागीचे में भेजा और कहा — "तुमको वहाँ बहुत सारे याम[27] मिलेंगे। उनमें से कुछ तुमसे यह कहेंगे कि "हमको उखाड़ लो।" उनको तुम ऐसे ही छोड़ देना।

पर इनमें से कुछ ऐसे भी होंगे जो तुमसे यह कहेंगे "नहीं तुम हमें मत उखाड़ो।" तुम उनको उखाड़ लेना और उनको मेरे पास ले आओ।"

सो मैं उसके बागीचे में गया तो वहाँ सबसे ज़्यादा तेज़ आवाजें पोना यामों की ही आयीं कि "हमें उखाड़ लो। हमें उखाड़ लो।" पर उनको मैंने छोड़ दिया क्योंकि उस बुढ़िया ने उनको उखाड़ने के लिये मना किया था।

[27] Yam is a tuber root vegetable commonly grown and used in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries – see its picture above.

मैंने उन पतले वाले पानी के यामों को उखाड़ लिया जो कह रहे थे "हमको छोड़ दो। हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी ने अपने मन में कहा — "तुम बेवकूफ हो। तुमने पानी वाले याम क्यों उखाड़े जबकि तुम पोना याम उखाड़ सकते थे?"

टिकूमा आगे बोला — "जब मैं वे याम उस बुढ़िया के पास ले कर गया तो उस बुढ़िया ने कहा — "अब तुम इनको छील लो। छील कर इनके अन्दर का गूदा फेंक दो और इनका छिलका उबाल लो।"

मुझे यह सुन कर आश्चर्य तो जरूर हुआ पर मैंने वैसा ही किया जैसा कि उसने मुझसे करने के लिये कहा था। मैंने वे छिलके पानी में डाल कर उबलने के लिये रख दिये। जल्दी ही पानी उबलने लगा।

जब वे छिलके उस पानी में उबल गये तो मैंने उनका पानी फेंक दिया तो वहाँ तो बहुत ही स्वादिष्ट याम थे जिनको हमने पलवा चटनी[28] के साथ खाया।

खाने के बाद वह बुढ़िया बोली — "बेटा, तुम मेरे बहुत ही वफादार रहे हो। जाओ बराबर वाले कमरे में जाओ और वहाँ से कोई एक बरतन उठा लाओ। उस कमरे में बहुत सारे बरतन रखे हैं।

[28] Palava Sauce – is a very common stew or soup eaten in West African countries – Nigeria, Ghana, Liberia and Sierra Leone etc. It is made from meat or fish and greens (spinach etc) and is eaten with practically every food, such as boiled rice, potatoes, Gari, Fufu or Yams.

उनमें से कई बरतन तुमसे कहेंगे कि "हमें उठा लो। हमें उठा लो।" पर तुम उनको मत उठाना। उनमें से जो बरतन यह कहे कि "मुझे मत उठाओ।" तुम वही बरतन उठा लेना और अपने रास्ते चले जाना। फिर मेरी पीली चिड़िया तुमको बता देगी कि फिर तुमको क्या करना है।"

अनन्सी और आगे सुनने के लिये उत्सुक था सो उसके मुँह से निकला — "अच्छा? फिर"

सो टिकूमा ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "बस ठीक यही हुआ मेरे साथ। मैं उस पास वाले कमरे में गया तो वहाँ तो **100** या फिर हजारों बरतन रखे हुए थे।

उनमें कुछ बरतन बहुत बड़े थे तो कुछ बहुत छोटे थे, तो कुछ सोने के थे तो कुछ चाँदी के थे, तो कुछ पीतल के तो कुछ मिट्टी के।

पर उनमें से जो बरतन मुझे अच्छे लग रहे थे करीब करीब उन सबने यही कहा कि "हमको उठा लो।" पर उनको तो मुझे उठाना नहीं था सो मैंने उनको वहीं छोड़ दिया।

केवल एक बरतन बोला "मुझे छोड़ दो।" और वह था यह छोटा बरतन। बस मैंने उसी बरतन को उठा लिया, उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

उसकी पीली चिड़िया मेरे आगे आगे उड़ रही थी।"

अनन्सी बोला — "तुमको कोई बड़ा बरतन चुनना चाहिये था। वह शायद इससे ज़्यादा खाना बनाता।"

टिकूमा बोला — "कौन जानता है। अच्छा तो यही था कि मैं उन बरतनों की मालकिन की बात मानता।"

अनन्सी बोला — "हुँह। पर इस बात पर तुम मेरा विश्वास करो कि तुमको वहाँ से सबसे बड़ा बरतन ही चुनना चाहिये था।"

अनन्सी उस रात सो नहीं सका। वह सारी रात केवल उन बरतनों के बारे में ही सोचता रहा। उसने सोचा कि कल वह भी वहाँ जायेगा और वह इससे ज़्यादा अच्छा बरतन ले कर आयेगा। कल... कल... कल...।

अगले दिन हालाँकि सारे गाँव का पेट बहुत अच्छे से भरा हुआ था फिर भी अनन्सी ने दिखावा किया कि वह एक छिपकली का पीछा कर रहा है और वह जंगल की तरफ दौड़ गया जैसा कि टिकूमा ने उसको बताया था।

वहाँ उसको एक ऊँचा सा पेड़ मिल गया तो वह उसके नीचे जा कर लेट गया। लो वहाँ तो तीन गिरियाँ और एक पत्थर पहले से ही पड़ा हुआ था।

उसने वे तीनों गिरियाँ और वह पत्थर तुरन्त ही उठा लिया। उसने पहली गिरी तोड़ी तो उसमें से एक गिरी निकली पर वह अपने आप गड्ढे की तरफ नहीं लुढ़की।

सो चारों तरफ को देखते हुए उसने वह गिरी पास के एक गड्ढे की तरफ लुढ़का दी। फिर उसने दूसरी गिरी तोड़ी तो वह भी वहीं जमीन पर ही पड़ी रही वह भी नहीं लुढ़की। अनन्सी ने उसको भी उसी गड्ढे की तरफ लुढ़का दिया।

फिर उसने तीसरी गिरी तोड़ी। जब वह भी अपने आप गड्ढे में नहीं गयी तो उसने उसको भी गड्ढे की तरफ लुढ़का दिया और उसके पीछे पीछे उस गड्ढे में कूद गया। इस तरह वह भी उसी बुढ़िया के पास जा पहुँचा।

पर वह बुढ़िया उससे कुछ नहीं बोली तो अनन्सी खुद ही बोला — "दादी मॉ, क्या मैं आपके लिये याम पका दूँ?"

बुढ़िया ने जवाब दिया — "अगर तुम्हारी मरजी हो तो। जब तुम बागीचे में जाओगे तो उन यामों को छोड़ देना जो तुमसे यह कहें कि "हमको उखाड़ लो।" बल्कि केवल उन्हीं यामों को उखाड़ना जो यह कहें कि "हमें छोड़ दो, हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी बोला — "ठीक है दादी मॉ।"

जब अनन्सी याम के बागीचे में पहुँचा तो वहॉ पोना यामों ने चिल्लाना शुरू किया "हमें उखाड़ लो, हमें उखाड़ लो।" और पतले पानी वाले यामों ने चिल्लाना शुरू किया "हमें छोड़ दो हमें छोड़ दो, हमको मत उखाड़ो हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी ने कुछ देर सोचा कि यह तो कोई बच्चा भी जानता था कि बड़े बड़े पोना याम बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं सो उसने कुछ पोना याम तोड़े और उनको उस बुढ़िया के पास ले आया।

वह बुढ़िया अपने एक स्टूल पर बैठी थी। उसने अनन्सी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। बस वह बोली — "तुम इनको छील लो। छील कर इनका गूदा फेंक देना और इनके छिलकों को पका लो।"

अनन्सी ने सोचा — "यह बुढ़िया तो आधी पागल लगती है। भला कोई याम के छिलके भी उबालता है।" सो उसने छिलके तो फेंक दिये और उसका गूदा उबलने रख दिया।

वे याम काफी देर तक उबलते रहे। काफी देर तक उबालने के बाद जब अनन्सी ने उनका पानी फेंका तो बरतन में तो केवल छोटे छोटे पत्थर पड़े हुए थे और कुछ भी नहीं था।

आखिर भूखा अनन्सी बोला — "दादी मॉ, क्या आप मुझे ले जाने के लिये एक बरतन नहीं देंगी?"

वह बुढ़िया बोली — "हॉ हॉ बेटे क्यों नहीं। तुम दूसरे कमरे में जाओ वहॉ बहुत सारे बरतन रखे है। उनमें से जो बरतन तुमसे यह कहे कि "मुझे उठा लो" तुम उस बरतन को मत उठाना और जो यह कहे कि "मुझे छोड़ दो, मुझे मत उठाओ" उसको उठा लेना।"

अनन्सी अपनी भूख तो भूल गया क्योंकि यही तो वह वजह थी जिसकी वजह से उसने घने जंगल तक की और फिर वहॉ से यहॉ तक की यात्रा की थी।

सो वह जल्दी जल्दी उस कमरे में गया जहॉ बहुत तरीके के बरतन रखे हुए थे – छोटे बड़े, सोने के चॉदी के, पीतल के तॉबे के, टैराकोटा के मिट्टी के, चमकीले, पके हुए, रंगीले आदि आदि।

वे सब अनन्सी से बोले।

एक बोला — "मैं तुम्हारे लिये बहुत ही बढ़िया खाना बनाऊॅगा।"

दूसरा बोला — "मैं तुम्हारे लिये बहुत ही बढ़िया मॉस भूनूॅगा।"

तीसरा बोला — "अगर तुम मुझे उठा लोगे तो तुम कभी भूखे नहीं रहोगे। सो तुम मुझे उठा लो।

तभी एक छोटा सा बरतन बोला — "मेहरबानी करके मुझे मत उठाओ मुझे छोड़ दो।" यह बरतन टिकूमा के बरतन से भी बहुत छोटा था।

अनन्सी ने एक बहुत बड़े सोने के बरतन की तरफ हाथ बढ़ाते हुए और उस छोटे से बरतन की तरफ देखते हुए सोचा "मैं तो तुमको वैसे भी नहीं उठाने वाला था।"

उसने सोचा कि उस बड़े सोने के बरतन से वह ज़्यादा लोगों को खाना खिला पायेगा और फिर वह सोने का होने की वजह से पैसा भी लायेगा।

अनन्सी ने कमरे का दरवाजा बन्द किया, उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया और बोला — "दादी मॉ, अगर आप मुझे इजाज़त दें तो अब मैं चलता हूँ।"

बुढ़िया ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अनन्सी पीली चिड़िया की सहायता से अपना बाहर जाने का रास्ता ढूँढ कर वहॉ से बाहर निकल आया।

अनन्सी बोला — "ओ पीली चिड़िया, तुम मेरे लोगों के पास उड़ कर जाओ और उनको खुशियॉ मनाने को कहो क्योंकि मैं जीत कर घर वापस लौट रहा हूँ।

मैं नीचे की दुनियॉ में हो कर आ रहा हूँ और मैं बहुत अमीर भी हो गया हूँ। अब उनको मेरी इज़्ज़त करने के लिये इकट्ठा होना ही चाहिये।"

चिड़िया ने वैसा ही किया और गॉव के लोग अनन्सी को इज़्ज़त देने के लिये गॉव के मैदान में इकट्ठा हो गये।

ढोल बजाने वालों ने ढोल बजाने शुरू कर दिये। गवैयों ने गाना शुरू कर दिया। नाचने वालों ने पैर पटक पटक कर नाचना शुरू कर दिया और वे तब तक नाचते रहे जब तक कि अनन्सी वहॉ नहीं आ गया।

आते ही वह बोला — "भाइयो देखो, यह एक सोने का बरतन है। यह अब ऐसा खाना पकायेगा जैसा कि तुम लोगों ने पहले कभी नहीं देखा होगा। ओ सोने के बरतन, अब मैं तुमको हुकुम देता हूँ कि इन सबके लिये एक दावत का इन्तजाम करो।"

उस बड़े बरतन में बहुत ज़ोर की गड़गड़ाने की आवाज हुई और उस बर्तन में से बहुत सारे कीड़े, मकोड़े, मकड़ियॉ, छिपकलियॉ, सॉप आदि निकल पड़े। रेंगने वाले जानवरों की प्लेटों पर प्लेटें सज गयीं।

पीली चिड़िया जो अभी भी ऊपर आसमान में थी ज़ोर से हॅस पड़ी। उसकी आवाज बिल्कुल उस बुढ़िया जैसी ही थी।

वह बोली — "तुम अपना लालच खाओ अनन्सी। तुम अपनी जलन खाओ। तुम तो मुझसे बारिश मॉग सकते थे या फिर शिकार के लिये जानवर मॉग सकते थे पर तुमने यह सब कुछ नहीं मॉगा। बल्कि तुमने तो मेरा कहा भी नहीं माना। अब तुम मेरा कहा न मानने का फल खाओ।"

वहॉ इकट्ठा हुए लोगों ने अनन्सी को उनकी बेइज़्ज़ती करने के लिये सजा देखने के लिये ढूँढा पर अनन्सी तो अपनी शरम छिपाने के लिये छत के कोने में बने अपने जाले में जा कर बैठ गया था।

5 भुलक्कड़ अनन्सी[29]

एक बार जंगलों के राजा ने अनन्सी को समुद्री किनारे के राजा के पास एक सन्देश ले कर भेजा।

अनन्सी ने जंगलों के राजा का सन्देश समुद्री किनारे के राजा के पास ले जाने के लिये मीलों सफर किया था। जंगल में कई दिनों के चलने के बाद अब उसकी यात्रा खत्म हो गयी थी। अब तो उसके दिमाग में बस भूख ही भूख घूम रही थी।

उन रातों को जो उसने जंगलों में बितायी थीं उनमें वह अक्सर खाने के ही सपने देखता रहता था – भाप निकलते हुए चावल और पालक की चटनी या फिर केंकड़े और पाम की गिरी[30] के सूप के साथ फूफू के मुलायम गोले[31]।

उस बेचारे की ऑख भूख की वजह से दो बार खुल चुकी थी पर उसके खाने के लिये कुछ नहीं था सिवाय कुछ नम पत्तियों के या

---

[29] Forgetful Ananse – a folktale from Ghana, West Africa. Adapted from the Book : "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

[30] Palm Nut – see its picture above. Nuts are inside them.

[31] Fufu or foofoo, or fufuo, or foufou is a staple food of many African countries and the Caribbean. It is often made with a flour made from the cassava plant – or alternatively another flour, such as semolina or maize (corn) flour. Fufu, served alongside soup (usually Groundnut Soup), is a national dish of Ghana. It can also be made by boiling starchy food crops like cassava, yams or cooking plantains and cocoyam then pounding them into a dough-like consistency. Fufu is eaten with the fingers, and a small ball of it can be dipped into an accompanying soup or sauce.

कीड़े मकोड़ों के या फिर जंगली चूहों के। वह भी जब जबकि वह उनको पकड़ सकता।

आखिरकार वह पो–अनो गॉव[32] आ पहुँचा था जिसमें वह समुद्री किनारे के राजा का मेहमान था। यहीं वह जंगलों के राजा का सन्देश उसको देगा। फिर जैसा कि वहॉ का रिवाज था वह नहायेगा और खाना खायेगा।

समुद्री किनारे का राजा बहुत दयालु था। जब उसको यह विश्वास हो गया कि अनन्सी को ठहरने के लिये एक कमरा मिल गया, नहाने के लिये पानी मिल गया और पहनने के लिये कपड़े मिल गये तो उसने अपनी बड़ी रानी से कहा कि वह उसके लिये खाना बनाये।

सोचो जब अनन्सी की नाक में स्वादिष्ट खानों के पकने की खुशबू पड़ी होगी तो वह कितना खुश हुआ होगा।

उसी खुशी में वह सोचता रहा — "लगता है कि चावल और मुर्गे का सूप बन रहा है।"

उससे इन्तजार नहीं हो पा रहा था सो उसने जल्दी से कपड़े पहने और खाने की खुशबू सूँघते सूँघते वह रसोईघर में जा पहुँचा।

उसको वहॉ देख कर राजा की पत्नी बोली — "ओह मिस्टर अनन्सी। तुम्हारा स्वागत है। तुम अपनी लम्बी यात्रा के बाद बहुत भूखे होगे। बस तुम्हारा खाना अभी तैयार हुआ जाता है।"

[32] Po Ano village

अनन्सी बोला — "हॉ वह तो मैं हूँ। इस समय तो आपके खाने की खुशबू जो पूरे कमरे में भर रही है मेरी भूख को और बढ़ा रही है।"

राजा की पत्नी ने अनन्सी के कटोरे का ढक्कन हटाया तो उसमें रखा खाना देख कर तो अनन्सी बेहोश हो गया क्योंकि उसके कटोरे में तो बहुत ही बेस्वाद खाना रखा था – सूखे कसावा[33] का लौंदा।

जंगलों के देश में इस खाने को गरीबों का खाना कहते थे और लोग इसको दीवार की तरफ को मुँह करके खाते थे ताकि लोग यह न देख लें कि वे इतने गरीब थे कि वे ऐसा खाना खा रहे थे। और यकीनन ऐसा खाना मेहमानों को देने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था।

यह देख कर अनन्सी तो इतना चौंक गया कि वह उस मुर्गे के सूप की तारीफ करना ही भूल गया जो राजा की पत्नी ने इस सूखे कसावा के लौंदे के साथ बनाया था बल्कि और बेहोश हो गया।

अनन्सी को बेहोश होते देख कर राजा की पत्नी सहायता के लिये चिल्लायी — "अरे कोई आओ। हमारे मेहमान की तबियत खराब हो गयी है।"

---

[33] Casaava – Cassava is also a root vegetable like Yam. Both look same except that Cassava is much thinner in diameter and longer in length. Their leaves are also different. This is also a staple diet of West African people – see its picture above.

जितनी देर में सहायता आयी उतनी देर में अनन्सी अपनी इस अचानक बेहोशी से कुछ कुछ होश में आ चुका था।

अनन्सी बहुत धीमे से बोला — "कोई खास बात नहीं है। बस केवल एक पुश्तैनी बीमारी[34]। इस बीमारी में कसावा खाना मुझे मना है यहाँ तक कि मैं उसको देख भी नहीं सकता।"

राजा की पत्नी बोली — "ओह मुझे बहुत अफसोस है मिस्टर अनन्सी। पर मुझे डर है कि फिर तो यह यात्रा तुम्हारे लिये बहुत मुश्किल पड़ेगी। क्योंकि यहाँ तो हर खाने के साथ कसावा खाया जाता है।"

अनन्सी ने सोचा यह तो नामुमकिन है। लगता है कि यह तो कोई चाल है मेरा इम्तिहान लेने के लिये। लोग हर खाने के साथ कसावा क्यों खाते हैं।

पर वे तो खाते थे। सुबह को वे कसावा का दलिया खाते थे। दोपहर में वे कसावा का लौंदा खाते थे और शाम को वे अपना कसावा भून कर खाते थे।

सो अनन्सी को रोज अपना खाना ढूँढने के लिये बाहर जाना पड़ता था – नम पत्ते और कीड़े मकोड़े। यह खबर सारे देश में फैल गयी कि मिस्टर अनन्सी को कसावा खाना मना था।

जब अनन्सी के जाने का दिन आया तो उसी दिन फसल काटने का त्यौहार था। उस दिन एक बहुत बड़ी दावत होने वाली थी।

---

[34] Hereditary malady

पर अब तक अनन्सी की यह इच्छा बहुत तेज़ हो गयी थी कि वह कसावा का एक बहुत ही छोटा सा टुकड़ा खा ले जो पो–ऐनो के लोग इतने शौक से कई तरीके से बनाते थे।

वे कसावा को मसालेदार तल कर बनाते थे, वे कसावा की तली हुई सब्जी बनाते थे और कसावा के साथ खाने वाला सूप आदि तो बनाते ही थे।

सो उस रात उसने एक प्लान बनाया।

अगले दिन सुबह बहुत साफ थी जैसे कि आसमान को भी पता था कि आज फसल काटने और दावत का त्यौहार है। हर चौराहों पर लोग खाना बना रहे थे त्यौहार की तैयारी कर रहे थे जहॉ राजा भी आने वाला था।

एक शाही चबूतरा बनाया गया था। उसके बीच में बैठने के लिये सीट लगायी गयी थीं जहॉ भाषण दिये जाने वाले थे और प्रार्थनाऐं कही जाने वाली थीं।

शाम से पहले ही पो–ऐनो के लोग वहॉ इकट्ठा होना शुरू हो गये थे। सभी लोग बहुत सजे हुऐ थे। उन्होंने अच्छे अच्छे डिजाइनों के चमकीले रंगों के कपड़े पहन रखे थे। सोने चॉदी मोती[35] और चमकीली लकड़ी के गहने पहन रखे थे।

[35] Translated for the word “Bead”, not pearls.

आखीर में राजा आया पर अनन्सी का कहीं पता नहीं था। प्रार्थनाऐं कही गयीं। भाषण दिये गये। भेंट लाने वाले राजा के लिये आग जलाने वाली लकड़ी और दूसरी भेंटें ले कर आये।

उसके बाद नाच शुरू होने वाला था। नाच के शुरू होने से ठीक पहले एक बहुत ही बूढ़ा आदमी एक खेत पर काम करने वाले के मोटे झोटे कपड़े पहने अपना लम्बा चाक[36] ू ले कर वहॉ आया।

वह वहॉ फसल काटने के त्यौहार पर इतने अच्छे कपड़े पहने लोगों में बिल्कुल अलग लग रहा था।

राजा अपने चबूतरे पर से चिल्लाया — "अनन्सी। यह तुम क्या कर रहे हो? इस सबका क्या मतलब है?"

अनन्सी बोला — "मुझे माफ करें जनाब पर मैंने सोचा कि शायद हम लोग अपनी फसल आज ही काटने जा रहे हैं।"

भीड़ चिल्लायी — "नहीं। आज तो केवल फसल काटने की खुशी मनाने का दिन है फसल काटने का नहीं।"

अनन्सी शरम से मुॅह लटका कर बोला — "ओह नहीं। आप सब तो यही सोच रहे होगे न कि मैं पागल हूॅ। पर मैं सचमुच में पागल नहीं हूॅ। यह तो बस मेरा भुलक्कड़पन है जो कभी कभी मेरे ऊपर छा जाता है।

[36] Translated for the word "Machet" – see its picture above.

यह वही भुलक्कड़पन है जिसने मुझसे यह कहलवा दिया था कि मुझे कसावा खाना मना है जबकि यह तो मेरा सबसे प्यारा खाना है।"

राजा ने उसको खुशी खुशी माफ कर दिया और वह यह देख कर भी बहुत खुश हुआ कि अनन्सी ने भी उन सबके साथ कसावा से बने बहुत सारे खाने खाये। पो–एनो के लोग भी अपनी दावत में अनन्सी को शामिल करके बहुत खुश हुए।

बहुत लोगों ने यह भी सोचा कि अनन्सी कुछ अजीब तरह का आदमी था पर फिर उनको यह भी लगा कि उसकी जैसी हालत में कभी कभी इस तरह का भुलक्कड़पन आ जाता है।

6 सोने वाली चटाई के राज़[37]

अबीना कोरोमा[38] जंगल के राजा का नवॉ बच्चा थी। वह बहुत सुन्दर थी और बहुत सारे नौजवान उससे शादी करना चाहते थे। रोज ही कोई न कोई कहीं न कहीं से उससे शादी की इच्छा प्रगट करने के लिये आता रहता।

कोई उसके लिये गीत गाता तो कोई उसके लिये नाचता। बहुत सारे लोग कुश्ती लड़ते। कुछ जंगली जानवरों का शिकार करके लाते और उसको अपनी बहुत बड़ी जमीन और सम्पत्ति दिखाते।

पर अबीना उनमें से किसी से शादी नहीं करना चाहती थी।

यह देख कर जंगल के राजा को चिन्ता हुई कि इस तरह से तो उसकी बेटी बिन ब्याही ही रह जायेगी सो उसने एक मुकाबले का इन्तजाम किया।

मुनादी पीटने वाले सब शहरों में जा जा कर बोल रहे थे "अगर

कोई राजा को उसकी कॉटों वाली और नैटिल[39] के पौधे लगी एक एकड़ जमीन को बिना खुजाये और बिना कोई शिकायत किये

[37] Mat Confidences – a folktale from Ghana, Western Africa, Africa. This story taken from the book ; "The Pot of Wisdom: Ananse Stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

[38] Abena Nkoroma

[39] Nettle is a thorny plant which produces pain on touching it – see its picture bove.

साफ कर सकता है तो वह अपनी बेटी अबीना की शादी उससे कर देगा।"

उसको यह विश्वास था कि कोई भी आदमी वह एक एकड़ जमीन जिसमें नैटिल और कॉटे उगे हुए थे बिना खुजाये और बिना शिकायत किये साफ नहीं कर सकता था।

जो भी यह काम करने की कोशिश करने आता अबीना अपनी खिड़की में बैठी उन सबको देख देख कर हॅसती रहती।

जो बड़ी उम्र के लोग थे वे यह सोचते थे कि कोई भी लड़की इस काबिल नहीं थी जिसके लिये इतनी मुसीबत मोल ली जाये पर हॉ कई नौजवान लोग इसकी कोशिश करने के लिये जरूर आते।

करीब करीब सारे ही लोग अपनी अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहे क्योंकि नैटिल से खुजली भी होती थी और कॉटे भी चुभते थे। यह बहुत ही मुश्किल था कि कोई भी आदमी काम करते करते खुजाने के लिये रुके नहीं और कॉटा चुभने पर आह न करे।

एक बुधवार के दिन सुबह जिस दिन बाजार का दिन भी था अनन्सी ने सोचा कि वह यह काम करेगा।

उसने अपने से बड़े एक आदमी से कहा — "वह तो इस काबिल है कि मैं उसके लिये इतनी तकलीफ उठाऊॅ। वह राजा की बेटी है। वह सबसे ज़्यादा सुन्दर है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उससे शादी कर के मैं भी शाही परिवार में शामिल हो जाऊॅगा।"

सो उसने अपने कपड़े इस तरह से उतारे जैसे आदमी लोग जब काम करने जाते हैं तब उतारते हैं, अपना लम्बा वाला चाकू[40] लिया और राजा की उस नैटिल के पौधों और कॉटों वाली जमीन पर अपना काम करने पहुँच गया।

वहॉ जा कर उसने अपने लम्बे वाले चाकू से उन पौधों की कतारों की कतारें काटनी शुरू कर दीं।

जल्दी ही बहुत सारे बाजार जाने वाले वहॉ रुक कर उसको यह काम करते देखने लगे। काम करते समय वह एक गीत भी गाता जा रहा था।

अबीना कोरोमा अबीना कोरोमा
यहॉ एक आदमी है तुमको देखने के लिये, अबीना कोरोमा
“उससे पूछो कि वह मुझसे क्या चाहता है?”
अबीना कोरोमा वह तुमसे प्यार करता है

“क्या वह लड़ने वाला है? क्या वह एक राजकुमार है?
क्या वह मेरे प्यार के काबिल है?”
अबीना कोरोमा वह एक थका हुआ आदमी है
“उससे “न” कह दो, उससे जाने को कह दो”

[40] Translated for the word “Matchet” – see its picture above

यह एक ऐसा गीत था जिसे हर आदमी गाने लगा। अनन्सी दूसरों को भी यह गीत गाता सुन कर बहुत खुश हुआ सो वह और ज़्यादा मेहनत से काम करने लगा।

पर कुछ ही देर में नैटिल के पौधों ने उसको काटना शुरू कर दिया और कॉटे उसको चुभने लगे जिन्होंने उसका गाना रोक दिया और उसके मुँह से आह निकलने लगी।

पर उसने उन दोनों को अपने गाने में ऐसे मिला लिया जैसे वह भी उसके गाने का एक हिस्सा हो और भीड़ भी उसे खुशी से गाने लगी।

नैटिल के पौधों और कॉटों ने अनन्सी को और काटना और चुभना शुरू कर दिया तो अनन्सी ने अपना गीत बदल दिया —

मुझसे पूछो कि मैं उससे प्यार क्यों करता हूँ

तुरन्त ही भीड़ भी उसके बाद चिल्लायी — "अनन्सी क्यों, ओ अनन्सी क्यों"

अनन्सी ने गाया —

क्या तुमने अबीना कोरोमा का नाम नहीं सुना?
उसकी बाँहें, वे कहते हैं, कि पतली और गदराई हुई हैं
और जब वह नाचती है तो वे इधर उधर हिलती हैं
उसकी टाँगें, वे कहते हैं, कि लम्बी और चिकनी हैं
और जब वह नाचती है तो वे इधर उधर हिलती हैं

उसकी गरदन, वे कहते हैं, एक मीनार की तरह है
उसकी ऑखें बिना बादल के आसमान में चॉद जैसी हैं
उसकी नाक बिल्कुल सीधी है, भाषा के डंडे जैसी
और उसके होठ इतने मीठे हैं जितनी मीठी ताजा पाम की शराब

जब भी वह अबीना कोरोमा के शरीर के किसी हिस्से का नाम लेता तो अनन्सी अपने शरीर के उस हिस्से को मलने और खुजाने के लिये रुक जाता। इससे दूसरों को लगता कि वह अबीना के शरीर के हिस्सों की बात कर रहा है जबकि वह उस समय अपने शरीर के हिस्से सहलाता या खुजलाता होता।

और इस तरह से अनन्सी ने गा गा कर और भीड़ की सहायता से बिना दूसरों को दिखाये हुए वह एक एकड़ जमीन बिना खुजाये और बिना आह किये ही साफ कर दी।

यह बात राजा को बतायी गयी कि अनन्सी ने उसकी एक एकड़ जमीन बिना खुजाये और बिना आह किये ही बिल्कुल साफ कर दी है।

तो राजा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया और उसने अबीना कोरोमा को अनन्सी को सौंप दिया और वे पति पत्नी बन गये।

कुछ दिन बाद जब अबीना और अनन्सी अपनी सोने वाली चटाइयों पर लेटे हुए थे तो अबीना ने अनन्सी से पूछा — "प्रिय,

एक बात तो बताओ कि तुमने मेरे पिता की वह एक एकड़ जमीन बिना खुजाये और बिना आह किये कैसे साफ की?"

अनन्सी ने अबीना को प्रभावित करने के लिये कहा — "ओह वह।" फिर उसने उसको बताया कि कैसे उसने एक बाजार वाला दिन इस काम के लिये चुना ताकि उसको भीड़ की सहायता मिल सके।

फिर कैसे उसने इस काम को करने के लिये वे गीत और इशारे चुने जिनमें उसने साफ तरीके से कुछ खुजाया भी नहीं और कोई आह भी नहीं की।

अबीना बोली — "आहा। अब मैं तुम्हें जान गयी।"

अनन्सी बोला — "क्या मतलब?"

असल में अनन्सी यह सुन कर कुछ परेशानी में पड़ गया क्योंकि वह तो यह सोच रहा था कि उसकी यह चालाकी सुन कर अबीना उसकी तारीफ करेगी।

पर अबीना तो उसके और पास खिसक आयी और बोली — "अब मैं अपने पिता से यह सब कहूँगी कि तुमने मुझे पाने के लिये क्या चालाकी खेली है। तुम तो अब बहुत मुश्किल में पड़ गये हो अनन्सी।"

अनन्सी ने उससे प्रार्थना की — "अबीना मेरी पत्नी। मेहरबानी करके मेरा भेद न खोलना। मैं तुम्हारा पति हूँ। यह ठीक नहीं है कि

तुम हमारे बीच के राज़ किसी और पर खोलो, खास करके सोने वाली चटाइयों के राज़।"

पर अबीना ने तो तय कर लिया था कि वह यह बात अपने पिता से जरूर कहेगी। उसने अनन्सी की तरफ से मुँह फेरा और गहरी नींद सो गयी। पर अनन्सी को नींद नहीं आयी वह रात भर करवटें बदलता रहा। काफी देर के बाद उसके दिमाग में एक चाल आयी।

जब रात काफी बीत गयी तो अनन्सी ने अबीना का नाम तीन बार पुकारा। जब उसने कोई जवाब नहीं दिया तो वह एक छोटी बालटी में पानी ले कर आया और उसकी सोने वाली चटाई पर पलट दिया। पानी से उसकी चटाई गीली कर वह अपनी चटाई पर सोने चला गया।

सुबह को वह बहुत गुस्से में भर कर उठा और अबीना को उठाया — "अबीना, यह मैं क्या देख रहा हूँ? वह लड़की जिसके साथ शादी करने के लिये मैंने इतना काम किया क्या वह सब इसलिये किया था कि वह रात को चटाई गीली करे?

उफ, मेरे लिये यह कितने शरम की बात है कि मैंने एक ऐसी लड़की से शादी की है जो रात को बिस्तर गीला करती हो। मुझे यह सब कुछ बड़े लोगों से कहना ही होगा क्योंकि यह तो मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है।"

अब अबीना कोरोमा की बारी थी अनन्सी से प्रार्थना करने की पर अनन्सी तो कुछ सुनने को ही तैयार नहीं था। आखिर अबीना बोली — "प्रिय, हमको इस घटना को अपना सोने वाली चटाइयों का राज़ ही रखना चाहिये।"

अनन्सी जीत की खुशी से बोला — "अगर तुम पहले वाला मामला सोने वाली चटाइयों का राज़ रखो तो।"

अबीना को इस बात पर राजी होना ही पड़ा और इस तरह अनन्सी ने अपनी ज़िन्दगी और अपनी शादी बचायी।

आज भी बहुत सारे लोग अपनी शादियॉ अपने सोने वाली चटाइयों की बात को राज़ रख कर ही बचाते हैं।

7 अनन्सी और गाने वाला शाल[41]

एक साल एक बहुत ही अजीब सी घटना घटी। उस साल केवल बारिश केवल गिरगिट[42] के खेत में ही बरसी और अनन्सी के खेत में तो बिल्कुल ही नहीं बरसी।

अनन्सी बेचारा देखता रहा कि उसके खेत की फसल पहले तो पानी की कमी की वजह से सूख गयी और फिर मर गयी जबकि गिरगिट के खेत की फसल खूब हरी थी और खूब बढ़ रही थी।

उसको गिरगिट के खेत को देख कर ही लग रहा था कि उसके खेत में याम[43] बहुत अच्छे होंगे। अनन्सी ने बहुत कोशिश की कि वह गिरगिट से साझेदारी कर ले पर गिरगिट भी बेवकूफ नहीं था वह इस साझेदारी के लिये बिल्कुल तैयार नहीं हुआ।

जल्दी ही अनन्सी के दिमाग में एक चाल आयी जिससे वह गिरगिट को उसके खेत से बाहर निकाल सकता था।

---

[41] Ananse and the Singing Cloak. A folktale from Ghana, West Africa.
Adapted from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe.
Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

[42] Translated for the word "Chameleon" – see its picture above.

[43] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries – see its picture above.

हर आदमी जानता है कि गिरगिट लोग कोई सड़क नहीं बनाते। उनको जहॉ कहीं जाना होता है वे वहॉ घास और पत्तियों के ऊपर चल कर ही चले जाते हैं।

अनन्सी ने भी यह बात गिरगिट के खेत के चारों तरफ घूम कर पक्की कर ली कि उसके खेत तक कोई सड़क नहीं आती थी। इसका मतलब यह था कि उसकी सोची हुई चाल अब काम कर सकती थी।

अनन्सी ने अपने बच्चों से कहा कि वे रात भर अपने घर से गिरगिट के खेत तक चल कर एक सड़क बनायें। बच्चों ने यही किया। वे कई हफ्तों तक अपने घर से गिरगिट के खेत तक चलते रहे जब तक कि सड़क नहीं बन गयी। अब अनन्सी अपनी चाल खेलने के लिये तैयार था।

एक दिन जब गिरगिट घास और पत्तियों पर से हो कर अपने खेत पर जा रहा था तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अनन्सी और उसके बेटे उसके खेत से उसके याम उखाड़ रहे थे।

गिरगिट तुरन्त चिल्लाया — "रुक जाओ। यह तुम लोग मेरे खेत पर क्या कर रहे हो?"

अनन्सी बोला — "तुम्हारा खेत? क्या यह तुम्हारा खेत है? लगता है तुम सोते में बात कर रहे हो। यह तुम्हारा खेत कबसे हो गया? यह तो सभी लोग जानते हैं कि यह मेरा खेत है।"

इस तरह वे घंटों तक आपस में बहस करते रहे और उनकी वह बहस यहॉ तक बढ़ी कि वे करीब करीब लड़ने पर आ गये पर गिरगिट ने सोचा कि अनन्सी से यहॉ लड़ने की बजाय वह इस मामले को सरदार के पास ले जाये।

गिरगिट ने सारा मामला जा कर सरदार को बताया तो वह भी यह अजीब सी शिकायत सुन कर परेशानी में पड़ गया।

अनन्सी की अपने समाज में इज़्ज़त बहुत थी सो उसकी एक किसान की तरह की इज़्ज़त को ध्यान में रखते हुए और उसके घर से गिरगिट के खेत तक जाते हुए एक बहुत ज़्यादा इस्तेमाल की गयी सड़क का सबूत देख कर सरदार ने वह खेत अनन्सी को दे दिया।

बस फिर क्या था अनन्सी ने उस खेत के सारे याम निकाल लिये जो उसके नहीं थे। गिरगिट को अपना खेत इस तरह खोते देख कर बहुत गुस्सा आया। करीब करीब एक महीने तक वह यही सोचता रहा कि वह अनन्सी से इस बात का बदला कैसे ले।

आखिर वह उठा, उसने अपने सबसे पुराने फटे कपड़े पहने और अनन्सी से यह कहने गया कि उसकी बड़ी मेहरबानी होगी अगर वह खेत से फसल काटने के बाद वहॉ से उसको बची हुई फसल उठाने दे तो।

गिरगिट की यह नम्रता देख कर अनन्सी ने उसको इस बात की इजाज़त दे दी और वह गिरगिट से आपस में सुलह करने पर राजी हो गया।

अब क्योंकि खेत में कुछ खास तो बचा नहीं था सो गिरगिट वहाँ से याम की केवल सूखी डालियाँ ले कर ही वापस आ पाया।

घर आ कर उसने अपने घर में एक गहरा गड्ढा खोदा जिसके लिये उसने एक बहुत ही तंग दरवाजा बनाया। अपनी इस तरकीब पर गिरगिट कई दिन तक चुपचाप काम करता रहा।

उसने पहले मक्खियाँ पकड़ीं, फिर उसने अपने लिये याम की उन सूखी डालियों और उन मक्खियों से एक बहुत ही बढ़िया शाल[44] बनाया। तभी याम उखाड़ने का त्यौहार[45] आ गया।

सो गिरगिट ने अपना नया शाल ओढ़ा और बड़ी शान से उसको चारों तरफ हिलाता और बजाता हुआ चल दिया। लोगों ने तुरन्त ही उस शाल को गाते हुए शाल का नाम दे दिया।

याम के त्यौहार के दिन अनन्सी को सबसे अच्छा किसान घोषित कर दिया गया क्योंकि उसके याम सबसे बड़े थे। पर सब लोग

[44] Translated for the word “Cloak” – A fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.
[45] The New Yam Festival is a phenomenon of Igbo people of Nigeria held at the end of rainy season in early August. But it is practiced throughout the West Africa, especially Nigeria and Ghana, symbolizing the conclusion of the harvest and the beginning of the new work cycle. The evening prior to the day of the festival, all old yams (from the previous year's crop) are consumed or discarded. The next day, only dishes of yam are served. This festival continues for days, if not for weeks. People have feasts and sing and dance throughout the celebrations.

गिरगिट के शाल की ही बात कर रहे थे। और अब अनन्सी को वह शाल चाहिये था।

जब याम का त्यौहार खत्म हो गया तो अनन्सी उस शाल को खरीदने के लिये गिरगिट के घर गया।

गिरगिट बोला — "ओह नहीं नहीं। यह शाल बिकाऊ नहीं है। यह तो बहुत ही खास शाल है मैं इसको नहीं बेचूँगा।"

आखिर वह उस शाल को अनन्सी को इस शर्त पर देने के लिये राजी हो गया कि अनन्सी उसका गड्ढा जो उसने अपने घर में बनाया था खाने से पूरा पूरा भर देगा।

अनन्सी ने उस के गड्ढे को देखा तो उसने देखा कि उस गड्ढे का दरवाजा तो बहुत ही छोटा सा है। उस छोटे से दरवाजे को देख कर उसने सोचा कि गड्ढा भी छोटा ही होगा सो वह राजी हो गया।

उस छोटे से गड्ढे को देख कर उसने गिरगिट को उस गड्ढे से भी दोगुना खाना देने का वायदा किया।

अनन्सी को गिरगिट का गड्ढा भरते हुए दस दिन लग गये। यह देख कर गिरगिट ने जो अपने स्वभाव से ही बहुत अच्छा था अनन्सी को अपने बाकी के कर्जे से आजाद कर दिया और उसको अपना गाने वाला शाल भी दे दिया।

पर जब अनन्सी ने उस शाल को पहना तो याम की सूखी डालियॉ जिन्होंने उन मक्खियों को बॉध रखा था टूट कर बिखर

गयीं। और जब हवा का ज़ोर का झोंका चला तो वे मक्खियाँ भी चारों तरफ उड़ गयीं।

अब अनन्सी के पास याम की केवल सड़ी हुई डालियों का फटा हुआ शाल रह गया जो उसको पूरा पूरा भी नहीं ढक पा रहा था।

उसके बच्चे उसकी तरफ उँगली दिखा दिखा कर अपने आधे नंगे पिता को देख कर हँसने लगे। यह देख कर वह पास के पेड़ पर बुने अपने जाले में जा कर छिप गया।

उधर गिरगिट बहुत बहुत हँसा पर यह जानते हुए कि अनन्सी एक बहुत ही चालाक आदमी है वह हमेशा ही उससे चौकन्ना रहता और उससे छिपने के लिये वह अक्सर ही अपने रंग बदलता रहता।

8 अनन्सी और चिड़ियें[46]

एक शाम जब सूरज डूबने वाला था तो अनन्सी ने अपने बच्चों को आग के पास इकट्ठा किया और उनको अपनी शरारतों की कहानियॉ सुनाने लगा।

जैसे जैसे रात होती गयी अनन्सी की कहानियॉ लम्बी होती गयीं। वह उनको खूब नमक मिर्च लगा कर सुना रहा था।

आखिर उसकी पत्नी उसकी इन कहानियों से ऊब गयी सो वह बोली — "यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम अभी तक चिड़ियों के साथ नहीं उड़े।"

अनन्सी बोला — "आह, बस वही तो मैंने नहीं किया है। हॉ, यह काम अगर चिड़ियें कर सकती हैं और यहॉ तक कि यह काम अगर एक छोटी सी मक्खी भी कर सकती है तब फिर मैं अनन्सी क्यों नहीं कर सकता।"

और इसके साथ ही उसने बच्चों को गुड नाइट कहा और अपने दूसरे कारनामे का प्लान बनाते हुए सोने चला गया।

अगले कुछ दिनों के लिये अनन्सी उन चिड़ियों और कौओं से बहुत ही नम्र रहा जो उसके आस पास उड़ती रहती थीं।

---

[46] Ananse and the Birds. A folktale from Ghana, West Africa. Adapted from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

वह उन मुर्गियों और बतखों से भी बहुत ही नम्रता का बरताव करता रहा जो अपने खाने के लिये जमीन खोदती रहती थीं। वह उनको खाने के कौर बना बना कर खिलाता और उनसे बातें करता।

और इसके बदले में वह उनसे कुछ नहीं माँगता सिवाय एक पंख के। उन पंखों को वह रबर और टार[47] से बाँध लेता ताकि वह उनको चिड़ियों की तरह के दो पंख बना सके।

उससे अगले हफ्ते रात में जब उसको कोई नहीं देख रहा होता तो वह उड़ने का अभ्यास करता रहा। केवल एक मादा उल्लू ही उसको देख रही होती जो रात को शिकार करने के लिये निकलती थी।

एक रात वह बोली — "अनन्सी हू हू। आसमान चिड़ियों के लिये है तुम्हारे लिये नहीं। आसमान का जीव बनने के लिये केवल पंखों की ही जरूरत नहीं होती कुछ और भी चाहिये।"

अनन्सी ने उसको डाँटा — "चुप रह ओ बूढ़ी उल्लू। अगर तुझे कोई शिकार नहीं मिलता तो घर जा कर सो।" और वह फिर से अपने पंखों को ठीक करने में और उड़ने के अभ्यास में लग गया।

[47] Tar - Tar is dark black, thick, flammable liquid distilled from wood or coal, consisting of a mixture of hydrocarbons, resins, alcohols, and other compounds. It is used in roadmaking and for coating and preserving timber.

एक दिन जब चिड़ियें उड़ने की तैयारी कर रही थीं तो अनन्सी उनके पास गया और उनसे पूछा कि क्या वह उनके साथ आ सकता है तो एक कौआ बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं, अगर तुम उड़ सकते हो तो। और फिर तुम चिड़ियों की दावत में भी शामिल हो सकते हो जो दूर पहाड़ पर हो रही है।"

दावत का नाम सुनते ही अनन्सी के मुँह में पानी आ गया। और इसके बाद तो उस कौए ने और उन सब चिड़ियों ने अनन्सी की बात का आनन्द लेते हुए चिल्लाना शुरू कर दिया।

अनन्सी ने जब उड़ने के लिये अपने पंख निकाले और उनको लगा कर उड़ना शुरू किया तो उन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ।

"पहली कूद मेरे दॉयी वाली आगे की टॉग पर, फिर एक और कूद और बस फिर मैं ऊपर।" और अनन्सी ने उड़ना शुरू कर दिया। वह उन चिड़ियों में सबसे अच्छा उड़ रहा था।

चिड़ियॉ यह देख कर खुश नहीं थीं पर क्योंकि कौए ने अनन्सी से पहले ही कह दिया था इसलिये उसको तो अपनी बात रखनी ही थी।

वे सब ऊँचे और ऊँचे बादलों से भी ऊपर की तरफ उड़ते जारहे थे। वहॉ हवा हल्की और और हल्की होती जा रही थी और उड़ना भी मुश्किल होता जा रहा था पर अनन्सी फिर भी अपने दोस्तों के साथ उड़ता ही जा रहा था।

आखिर वे सब उस पहाड़ पर आ पहुँचे जहाँ सारी चिड़ियें दावत की तैयारी में थीं।

जब अनन्सी ने वहाँ दावत का खाना देखा तो उसको तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। कितना सारा खाना था वहाँ। वहाँ उसने बहुत खाया बहुत खाया। वह यह भूल गया था कि वह तो वहाँ केवल एक मेहमान था।

वह वहाँ सब चिड़ियों से माँस और हड्डियों के लिये और याम और पत्तियों के लिये खूब लड़ा और वहाँ एक मुसीबत बन गया। इतना सारा खाना खा कर वह सो गया।

उसके सोने के बाद सब चिड़ियों ने एक एक करके उससे अपने अपने पंख ले लिये। और जब वह अभी सो ही रहा था तो वे वहाँ से चली गयीं। बस एक कौआ रह गया जिसने अनन्सी को जगाया।

कौआ बोला — "ठीक है दोस्त अनन्सी, अब नीचे मिलते हैं।"

अनन्सी उठा तो उसने देखा कि उसके तो सारे पंख जा चुके हैं तो वह बोला — "मेहरबानी करके क्या तुम मुझे नीचे ले जाने में मेरी सहायता कर सकते हो?"

कौए ने न समझने का बहाना करते हुए कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं।" यह कह कर उसने अनन्सी को पहाड़ से नीचे धक्का दे दिया।

जैसे ही अनन्सी पहाड़ से नीचे गिरा वह चिल्लाया — "ई ई ई ई ई।"

तभी अँधेरे आसमान से एक अजीब सी आवाज आयी — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि आसमान चिड़ियों के लिये हैं। आसमान का जीव बनने के लिये केवल पंखों की ही जरूरत नहीं होती कुछ और भी चाहिये।"

यह आवाज उस मादा उल्लू की थी जिसने पहले एक बार अनन्सी को उड़ने के लिये सावधान किया था जो अब रात को शिकार करने के लिये निकली थी।

अनन्सी फिर चिल्लाया — "मेरी सहायता करो।"

उल्लू बोली — "अपना पेट दबाओ।"

अनन्सी ने वही किया जो उल्लू ने उससे कहा तो अनन्सी ने चिड़िया की दावत में जो खाना खाया था वह उसके पेट में से बारीक सिल्क के धागे के रूप में निकल आया।

उल्लू ने वे धागे पकड़ लिये और उनको एक पेड़ की शाख से कस कर बाँध दिया। इससे अनन्सी धरती पर एकदम से नहीं गिरा। वह उस पेड़ की शाख से लटक गया।

उस समय अनन्सी को लगा कि वह मादा उल्लू ठीक कह रही थी। वह बोला — "बस अब कोई उड़ना नहीं।" फिर उसने बहुत अच्छे अच्छे जाले बुनने का अभ्यास करना शुरू कर दिया ताकि वह फिर कभी न गिरे।

9 मकड़ा और उसके दो दोस्त[48]

एक बार ऐलनटाकुन[49] नाम का एक मकड़ा नाइजीरिया के एक गॉव में रहता था। उसके दो दोस्त थे। उसका एक दोस्त उसके दॉये हाथ की तरफ वाले गॉव में रहता था और उसका दूसरा दोस्त उसके बॉये हाथ की तरफ वाले गॉव में रहता था।

एक दिन ऐलनटाकुन के दॉये हाथ के गॉव में रहने वाला दोस्त उससे मिलने आया और उससे कहा — "मैं अपने सारे गॉव वालों को एक दावत दे रहा हूँ तो मैं चाहता हूँ कि तुम भी उस दावत में आओ।

ऐलनटाकुन दावत का यह न्यौता पा कर बहुत खुश हुआ। वह दिल खोल कर हॅसा और तुरन्त ही उसने एक जाला बुन लिया।

उस जाले का एक सिरा उसने अपने दोस्त को पकड़ा कर कहा — "मेरा प्लान यह है कि मेरे इस जाले के एक सिरे को तुम अपने गॉव ले जाओ। जब खाना बन जाये और सबको परसने के लिये तैयार हो जाये तब मेरा यह जाला खींच देना इससे मुझे पता चल जायेगा कि खाना तैयार हो गया है तो मैं उसी समय तुम्हारे घर चला आऊॅगा।"

---

[48] The Spider and His Two Friends – a folktale from Nigeria, Africa. By Abimbola Alao
Taken from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/328/preview

[49] Alantakun – name of the spider

और इस तरह से ऐलनटाकुन के जाले का एक सिरा हाथ में लिये हुए उसके दोस्त ने उसको विदा कहा और उसके दॉये हाथ के गॉव की तरफ चल दिया।

इसके कुछ देर बाद ही ऐलनटाकुन के बॉये तरफ के गॉव में रहने वाला उसका दोस्त उससे मिलने आया। उसने ऐलनटाकुन से कहा — "मैं अपने गॉव को एक दावत पर बुला रहा हूँ मैं चाहता हूँ कि तुम भी मेरी दावत में आओ।"

ऐलनटाकुन दावत का यह न्यौता पा कर भी बहुत खुश हुआ। वह दिल खोल कर हँसा और तुरन्त ही उसने एक और जाला बुन लिया।

उस जाले का एक सिरा उसने अपने दोस्त को पकड़ा कर कहा — "मेरा प्लान यह है कि मेरे इस जाले के एक सिरे को तुम अपने गॉव ले जाओ। जब खाना बन जाये और सबको परसने के लिये तैयार हो जाये तब मेरा यह जाला खींच देना इससे मुझे पता चल जायेगा कि खाना तैयार हो गया है तो मैं उसी समय तुम्हारे घर चल आऊँगा।"

और इस तरह से ऐलनटाकुन के जाले का एक सिरा लिये हुए उसके दूसरे दोस्त ने भी उसको विदा कहा और उसके बॉये हाथ के गॉव की तरफ चल दिया।

ऐलनटाकुन के दॉये तरफ के गॉव में रहने वाले दोस्त ने अपने घर पहुँचने के कुछ देर बाद ही खाना बना लिया। इत्तफाक से

उसके बॉये तरफ के गॉव में रहने वाले दोस्त ने भी उसी समय अर्प ना खाना बना लिया था।

दॉये तरफ वाले गॉव में रहने वाले दोस्त ने ऐलनटाकुन का दिया हुआ जाले का सिरा खींचना शुरू किया। अब क्योंकि उसके बॉयी तरफ रहने वाले दोस्त ने भी उसी समय अपना खाना बनाना खत्म किया था सो उसने भी ऐलनटाकुन के दिये हुए जाले का सिरा खींचना शुरू किया।

ऐलनटाकुन ने दोनों दोस्तों की तरफ से जाले की खींच महसूस की। जितना वे दोनों जाले को खींचते जाते थे उतना ही ऐलर्न टाकुन अपने बुने हुए जाले में फॅसता जाता था।

अब वह खिंचाव इतना ज़्यादा हो गया कि वह बेचारा चिल्लाने लगा और उसमें से छूटने की कोशिश करने लगा। पर उसके दोनों दोस्तों में से कोई भी उसकी चीखें नहीं सुन सका।

जब उन दोनों में से कोई उसे अपनी अपनी दावत में आते नहीं देख सका तो उन्होंने उसके दिये जाले के सिरे को और ज़ोर से खीं चना शुरू कर दिया क्योंकि उन दोनों को लगा कि उनका दोस्त मकड़ा सो गया होगा।

उनको तो यह भी पता नहीं था कि वह उस समय कितने बुरे स मय का सामना कर रहा था। मकड़ा अपने जाले में अपने आप ही फॅस गया था। वह कितनी भी कोशिश करे वहॉ से निकल भी नहीं पा रहा था।

अब ऐलनटाकुन को पता चला कि वह अपने ही जाले में क्यों फॅस गया था क्योंकि वह बहुत ही लालचीपने से काम कर रहा था।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**